॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जुलाई 2018 वर्ष 21, अंक 7
विक्रमी सम्वत् 2075
एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

योग एवं यज्ञ वैदिक संस्कृति का अनमोल खजाना

❒ ऋचा भार्गव

योग एवं यज्ञ भारतीय संस्कृति का अनमोल खजाना है जो हमारे ऋषि, मुनियों एवं मनिषियों ने हमें दिया है। विगत अनेक सदियों से ये दोनों विधाये लुप्त रही। परन्तु हमारे प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इसे (योग को) विश्व में फैलाया और योग दिवस विश्व के 180 देशो में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। स्वामी रामदेव पतंजलि योग संस्थान हरिद्वार के संस्थापक ने भारत के जन-जन में योग और योग की भावना पैदा की।

जब तक योग-योग बना रहा तब तक इसकी महत्ता लगभग नहीं के बराबर रही। परन्तु जब से योग-योगा कहा जाने लगा इसका प्रचार-प्रसार दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। वास्तव में योग को समझने एवं जानने की अति आवश्यकता है। योग के सात चरण होते हैं जो निम्नवत है:-

1. **यम**-(मनुष्य का ब्राह्य इंन्द्रियों पर नियंत्रण), 2. **नियम** (अन्त: इन्द्रियों पर नियंत्रण), 3. **आसन** (शरीर को योग साधना के योग्य बनाना), 4. **प्राणायाम** (प्राण और अपान आदि पांचप्राण भूत वायु पर प्रभाव डालना), 5. **प्रत्याहार** (ब्राह्य जगत के स्थूल प्रत्यक्ष दृष्ट जागतिक वातावरण से मन को अन्तर्मुख बनाना), 6. **धारणा**-(अपने इष्ट देव, इष्ट ध्येयो में मन लगाना), 7. **समाधि**-(मन ईश्वर में तल्लीन कर स्वयं को भूल जाना)

सामान्यत: आसनों को विभिन्न मुद्राओं में करना अथवा कराना योग माना जाने लगा जो योग का तीसरा चरण है। सामान्य व्यक्ति के लिए ''योग-कर्मसुकौशलम'' एवं योगचित वृति निरोध: ही है। किसी भी कार्य को कुशलतापूर्वक, नियमानुसार एवं अनुशासनिक तरीके से करना तथा अपने चित की वृतिओं पर पूर्ण नियंत्रण करना ही योग है। सत्याचरण योग में साधक होता है। अगर व्यक्ति योग के प्रथम दो चरणो यम-(अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह) तथा नियम-(शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर प्राणिधान) का पालन नहीं करता है तो वह योग नहीं कर रहा है। अत: इन दोनों का पालन करना योग के लिए अति आवश्यक है तथा योग करना तभी सार्थक है। आजकल योग की कक्षायें धनापर्जन के लिए गली-गली व मौहल्ले-मौहल्लों में चल रही हैं। योग का उपहास न करो।

पूरा योग एवं योगाभ्यास तो ऋषि, मुनि, साधु व सन्त और ब्रह्मचारी ही कर सकते हैं। स्वाध्याय द्वारा भी योग के निकट पहुँचा जा सकता है। स्वाध्याय और योग साधना से व्यक्ति कर्म योगी होकर ईश्वर की प्राप्ति कर सकता है। वह समाज एवं देश के लिए कल्याणकारी होता है।

यज्ञ-वेद समस्त सत्य विद्याओं के ज्ञान के साथ ईश्वरीय ज्ञान है। जब देश अन्धकार, अज्ञान, पाखण्डों तथा वेद विरूद्ध संस्कारों, रीति रिवाजों से ग्रस्त था तब देव दयानन्द महर्षि ने उद्घोष किया कि वेदो की ओर चलो। श्रेष्ठ पुरुषों का एक संगठन आर्य समाज की स्थापना हुई तथा देश की आजादी के लिए इस संगठन का बहुत अधिक योग दान रहा। वेदों पर आधारित प्राचीन वैदिक संस्कृति का धीरे-धीरे उदय होता गया। इसमें यज्ञ की महत्ता बताई गई। यज्ञ वैदिक संस्कृति का मेरूदण्ड है तथा अनमोल खजाना है। एक सद्गृहस्थ के लिए पाँच यज्ञ (1) ब्रह्म यज्ञ (सन्ध्या, उपासना), 2 देवयज्ञ (हवन, अग्निहोत्र), 3. मात-पितृ यज्ञ (माता-पिता, गुरुओं वरिष्ठो की सेवा), 4. अतिथि यज्ञ (पूर्व पितृ यज्ञ (माता-पिता, गुरुओं

(शेष पृष्ठ 17 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी पुनः निर्विरोध प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के 123वें वार्षिक साधारण अधिवेशन में

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का 123वीं वार्षिक साधारण अधिवेशन 27 मई 2018 को आर्य समाज (अनारकली) के सभागार में सम्पन्न हो गया। भीषण गर्मी के बावजूद देश भर से 281 प्रतिनिधियों ने अभूतपूर्व उपस्थिति देकर सभा के प्रति विश्वास व्यक्त किया।

आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी को पुनः निर्विरोध रूप से वर्ष 2018-19 के लिए सभा प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। उपप्रधान पद पर श्री प्रबोध महाजन, मन्त्री पद पर श्री एस.के. शर्मा, सहमन्त्री पद पर श्री सत्यपाल आर्य, कोषाध्यक्ष पद पर श्री बलदेव जिंदल एवं पुस्तकालयध्यक्ष पद पर श्री जे.पी. शूर निर्वाचित किए गए। चुनाव सम्पन्न कराने हेतु ब्रि.ए. के. अदलखा को सर्वसम्मति से निर्वाचन अधिकारी चुना गया। प्रांतीय सभाओं, आर्य युवा समाज के प्रांतीय अधिकारियों को नामित करने का अधिकार सर्वसम्मति से प्रधान जी को दिया गया।

नवनिर्वाचित सभा प्रधान डॉ. पूनम सूरी ने उनमें प्रदर्शित विश्वास के लिए सबका धन्यवाद किया। मान्य प्रधान जी ने अपने संबोधन में संगठन को और अधिक दृढ़ बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि आर्य समाज को विघटन से बचाना आज की सबसे बड़ी चुनौती है। इसके लिए, सौहार्द और सहयोग का वातावरण बनाने का उत्तरदायित्व हम सब पर है। मतभेद हो सकता है। अनचाहे में लोग दुश्मन से भी लगने लगते हैं लेकिन यह बात समझ लेनी चाहिए कि दुश्मन बुरा नहीं होता, दुश्मनी बुरी होती है। उन्होंने कहा कि आज हमें पूर्णतया आत्मिक रूप से आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगना होगा।

लार्ड मैकाले द्वारा इस देश की शिक्षा और संस्कृति को पहुंचाये नुकसान का जिक्र करते हुए मान्य प्रधान जी ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों के प्रचार और चरित्र निर्माण की प्रक्रिया को सबसे आवश्यक

(शेष पृष्ठ 19 पर)

प्रथम शिक्षक ''माँ''

''माँ'' शब्द में ही शीतलता, वात्सल्य, शान्ति का अभास होता है। माँ के साथ सभी की भावनाएँ जुड़ी होती है, माँ बचपन का दुलार है। माँ बचपन की मीठी-मीठी ठाट है माँ रोटी पर डाला अतिरिक्त घी है, माँ प्यार है, दुलार है.....

उपरोक्त सभी विशेषणों के साथ ''माँ'' चाहे तो शिशु को प्रताप, शिवाजी बना दें और चाहे तो कायर बना दें! माता चाहे तो बच्चे को ईश्वर भक्त और पुरुषार्थी बना दे चाहे तो नास्तिक और निकम्मा बना दें। माँ के हाथ में सब कुछ है, माँ ही बालक की प्रथम पाठशाला है।

इसके बाद अगला पड़ाव जहां संकल्प और विचार प्राप्त होते है, वह है हमारा समाज जिसमें हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है हमारे आस पास समाज में हमारे मित्र, सम्बन्धी, नेता, धर्मप्रचारक, पण्डित ऐसे सभी प्रकार के व्यक्तित्व जिनसे बालक प्रभावित होते है। आज कल फिल्मों के कलाकार भी नए बालको को प्रभावित करने लगे है। अच्छे व्यवहार वाले व्यक्ति अच्छे मापदण्ड स्थापित करते हुए प्रभावित करते है। बालको कि मित्र मण्डली से भी कु-विचार और सुविचार मिलने की सम्भावनाएँ अधिक होती है। माता को भी इस मित्र मण्डली के सदस्यों पर नजर रखनी आवश्यक है। मित्र मण्डली के सदस्य कभी बालको को अपने पैसो से खान-पान की बुरी आदतों की ओर प्रेरित करते है। यहाँ तक कि नशे तक की आदत डालते है। जब बालक को लत लग जाती है तो उसे घर से चोरी करना सिखाते है और चोरी के पैसों से स्वयं और उसको भी मौज के नाम पर कुविचारों और कुसंस्कारों की ओर आकर्षित करते है। बालक मानने लगता है कि यह मेरे हितेषी है, ऐसे बालक को तुरंत किसी गुरुकुल में घर और उस मित्र मण्डली से दूर भेजना चाहिए क्योंकि गुरुकुल की दिनचर्या में बालक धीरे-धीरे सुविचारो की और आचार्यवृन्द से प्रभावित होता है।

तीसरी पाठशाला यही से प्रारम्भ होता है। जहां आप अच्छी पुस्तकों से अच्छे संकल्पों और अच्छे विचारों को प्राप्त कर साधु, संतो के उपदेशो, विद्वानों के प्रवचनों के माध्यम से सन्मार्ग की और प्रेरित होते है। यहाँ फिर ''माँ'' का दायित्व है कि गुरुकुल और गुरुकुल के आचार्य को प्रखर कर ही गुरुकुल का चुनाव करे, प्राचीन काल में जैसे ही गुरुकुल में स्वाध्याय के लिए भेजें और जब बालक, युवा होकर गुरुकुल से शिक्षा पूर्ण कर जाता था तो गुरु शिष्य को निम्नलिखित संदेश देता था।

''प्रकृति-नियमों पर चलो अवश्य, परन्तु स्वाध्याय और प्रवचन को मत भूलो! सत्य के मार्ग पर अवश्य चलो, परन्तु स्वाध्याय और प्रवचन को मत भूलो! सन्तान उत्पन्न करो परन्तु स्वाध्याय और प्रवचन को स्मरण रखो! धन कमाओ परन्तु स्वाध्याय और प्रवचन को न भूलो!''

कुछ भी करो, परन्तु स्वाध्याय अवश्य करो। और यह स्वाध्याय क्या है? वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ, सत्यार्थप्रकाश और इसी प्रकार के अन्य उत्तम ग्रन्थो को प्रतिदिन पढ़ना। वर्तमान युग में भी अपने विद्यालय के पढ़ाई के साथ-साथ इन ग्रन्थों का भी स्वाध्याय किया जा सकता है। जब तक ऐसा होता था तब तक हमारे देश में लोगों के विचार उत्तम थे, संकल्प शिव थे। देश शक्तिशाली था, संसारभर का गुरु था। परन्तु जबसे स्वाध्याय की समाप्ति हुई, तभी से इस देश का पतन भी आरम्भ हुआ।

महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' में जहाँ भारत की गिरावट के कारण लिखे हैं वहाँ सबसे प्रथम कारण लिखा है 'वेदादि उत्तम ग्रन्थों के स्वाध्याय का न रहना।''

प्रथम माता, दूसरा समाज और तीसरी पुस्तकें। परन्तु वर्तमान युग में तो तीनों ही विद्यालय बिगड़ गये हैं। माता से उत्तम विचार नहीं मिलते। उसे अवकाश ही नहीं कि बच्चे को अच्छे विचार दे। समाज से उत्तम विचार नहीं मिलते, दूसरों को कहाँ से दे और स्वाध्याय तो कोई करता ही नहीं। स्वाध्याय होना चाहिए वेद का। लोगों के घरों में तो वेद ही नहीं। जो पुस्तक ही घर में नहीं उसे पढ़ेगा कौन?

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना के समय इसके नियम बनाये तो स्पष्ट कहा, ''वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना, प्रत्येक आर्य का परमधर्म है।'' परन्तु अब तो हम भी वेद नहीं पढ़ते। अब तो हम प्रातः काल समाचारपत्र लेकर बैठ जाते हैं। आँखे मलते हुए शौच जाने से पूर्व यह देखने का प्रयत्न करते हैं कि क्या समाचार है? चीन पाकिस्तान ने क्या किया है? मैं यह नहीं कहता कि पत्र न पढ़ो, अवश्य पढ़ो। परन्तु देखो भाई! पत्र का स्वाध्याय कोई स्वाध्याय नहीं। स्वाध्याय करना है तो वेद, उपनिषद् और दूसरे उत्तम ग्रन्थों का पाठ करो। बहुत नहीं कर सकते तो एक मन्त्र पढ़ो। प्रतिदिन पढ़ो।

हमारे ग्रंथ कहते हैं-''जो व्यक्ति सारी पृथिवी को स्वर्ण, चाँदी, हीरे और जवाहरात से भरकर दान दे दे, उसे उतना पुण्य नहीं मिलता जितना प्रतिदिन स्वाध्याय करने वाले को मिलता है।''

इसके पश्चात् भी स्वाध्याय न करो तो इससे बढ़कर भाग्यहीनता और क्या है? और फिर हमारे ऋषि आगे एक और बात कहते है। मनुष्य का यह जीवन है न, इसमें कई बार मनुष्य ऐसे दो राहे पर खड़ा हो जाता है जहाँ उसे पता नहीं होता कि किस मार्ग पर जाना चाहिए। ऋषि कहता है-''स्वाध्याय करनेवाले को यह दुविधा कभी उत्पन्न नहीं होती। उसे स्वयमेव ठीक मार्ग मिलता है। अपने रोग की चिकित्सा वह स्वयं कर लेता है। किसी के पास उसे जाना नहीं पड़ता। उसके जीवन में मिठास आती है, सफलता आती है, वह आगे बढ़ता जाता है।'' यह है स्वाध्याय का फल!

परन्तु जैसा मैंने कहा, आजकल तो तीनों विश्वविद्यालय बिगड़ गये हैं। इनसे उत्तम विचार मिल सकते थे। उत्तम विचारों से दृढ़ संकल्प हो सकता था। दृढ़ संकल्प से सफलता मिल सकती थी। हमने सारा क्रम ही चौपट कर रखा है तब सफलता मिलेगी कैसे?

ऐ मेरी ''माँ'' सम्भलो अपने दायित्वों को पहचानो। पहले से आज कुविचारों का प्रदूषण ज्यादा हो गया है। इस कारण हमारे ऋषियों ने जो कहा वह आज ही इतना ही उपयुक्त है जितना कई वर्षों पूर्व। आपके बालक का भविष्य आपके ही हाथों में है।

अजय टंकारावाला

सोचो, साथ क्या जाएगा

❑ नरेन्द्र आहूजा विवेक

आज के इस भौतिकतावादी युग का तथाकथित प्रगतिशील मनुष्य विकास की अंधी दौड़ में पूरा जीवन इस विकास के नाम पर भविष्य की चिंता करते हुए अपने लिए गाड़ी बंगला धन संपत्ति सुख-सुविधायें इकट्ठी करने में लगा रहता है। इन भौतिक सुख-सुविधाओं को पाने की अतृप्त लालसा में वह इन्हें पाने के साधनों की शुचिता पवित्रता पर भी ध्यान नहीं देता। भौतिकतावाद की अंधी दौड़ में पीछे रह जाने के भय से तथा इस विकास की चकाचौंध के सम्मोहन से मन्त्र मुग्ध मनुष्य अपने जीवन के मूल उद्देश्य से भटक कर भौतिक सुखों की उस राह पर चल रहा है जो अंततः उसे उसके विनाश की ओर ले जा रही है। शायद हमारी स्थिति भेड़ों के उस झुंड की भांति है जो एक के पीछे एक विनाश के कुंए में गिर रही है।

वर्तमान की सुख-सुविधाओं तथा भविष्य की चिंता में धन-संपत्ति एकत्रित करते समय हम अपने अनमोल तन मानव जीवन के उद्देश्य को भूल चुके हैं। यह समस्त भौतिक सुख-सुविधायें केवल ईश्वर प्रदत्त साधन हमारे शरीर मात्र के लिए हैं और यह मनुष्य तन हमें हमारे जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमारे पूर्व जन्मों के कर्मानुसार ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के आधीन मिला है परन्तु हम अपने इन साधनों अपनी मन बुद्धि इन्द्रियों को अपने अधीन रखने के स्थान पर भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए अपनी मन बुद्धि इन्द्रियों के अधीन हो चुके हैं। अपने जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ईश्वर प्रदत्त साधनों के अधीन होकर हम ठीक उसी प्रकार अपने विनाश की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो रहे है जैसे कोई शराबी वाहन चालक नशे की अवस्था में वाहन को चला रहा हो और अंततः दुर्घटना कर बैठे। जबकि वेद भगवान ने हमें सईस नहीं रईस बनने का संदेश देते हुए कहा अश्वस्य वारो गोशपद्यके। अथर्व 20.129.18 अर्थात् हे आत्मन् तू घुड़सवार होकर भी घोड़े के खुरों में कुट पिट रहा है। वेद भगवान ने खुद को पहचानने का अपनी शक्तियों को जानने का संदेश देते हुए कहा तू आत्मा है, घुड़सवार है-इन्द्रियों का स्वामी है परन्तु स्वामी होकर भी तू इन्द्रियों के विषयों में फंसकर कुट पिट रहा है। तू घोड़े पर सवारी करने वाला रईस बन, घोड़े की सेवा करने वाला सईस मत बन। सामवेद में भी अहं गोपतिः स्याम्। कहकर ईश्वर से प्रार्थना की गई कि मैं इन्द्रियों का स्वामी बनूं। यदि हम इन्द्रियों रूपी घोड़ों की लगाम कसकर उन्हें अपने वश में नहीं रखेगे तो निश्चित रूप से यह इन्द्रियां अति चंचल हमें विनाश की ओर ले जायेंगी।

वैसे भी यदि हम चिन्तन करें तो हम मनुष्य अपना सारा पुरुषार्थ परिश्रम वर्तमान के जीवन यापन या भविष्य की चिंता में करते हैं। यदि हम चिन्तन करें कि भविष्य में हमारे साथ क्या रहने वाला है तो शायद यह समस्त भौतिक सुख-सुविधायें गाड़ी बंगला धन-संपत्ति या रिश्ते-नाते पति-पत्नी पुत्र कुछ भी तो हमारे साथ नहीं जायेंगे मृत्यु के उपरांत यह सब पीछे छूटकर यहीं रह जाने वाला है। यह सभी भौतिक सुख सुविधायें शारीरिक सुख के लिए थीं और मृत्यु रूपी वियोग के उपरांत यहीं पीछे छूट जाने वाली है। अर्थात् यह समस्त भौतिक संपदा ना हमारे जीवन काल में हमारी थी ना मृत्यु के उपरांत साथ जाने वाली है यह तो हमारे शरीर और इन्द्रियों के सुख के लिए थी। यह तो केवल हम अपनी अज्ञानतावश अपनी इन्द्रियों के अधीन होकर उनकी सुख-सुविधाओं में ही लगे रहते हैं।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि आखिर इन भौतिक साधनों संबंधों सुख सुविधाओं के अतिरिक्त ऐसा क्या है जो हमारे लिए है और मृत्यु के उपरांत भी हमारे साथ जायेगा। इसे जानने के लिए हमें अपनी नित्यता और पुनः जन्म के सिद्धांत को जानना होगा। योगेश्वर कृष्ण ने विषाद में फंसे अर्जुन को गीता का ज्ञान देते हुए समझाया न हन्यते हन्यमाने शरीरे।। अर्थात् आत्मा शरीर के मारे जाने पर भी नहीं मरता। वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृहाति नरो पराणि। जैसे मनुष्य पुराने कपड़ों को छोड़कर नए पहनता है वैसे ही यह शरीरधारी आत्मा पुराने जीर्ण शरीर को त्यागकर नया धारण करता है। नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः। आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि जला नहीं सकती, जल गला नहीं सकता और वायु उड़ा नहीं सकती। आत्मा की नित्यता के साथ पुनः जन्म के सिद्धांत को प्रतिपादित करते हुए योगेश्वर कृष्ण ने कहा जातस्य ही ध्रुवो मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य च। पैदा होने वाले की मृत्यु और मरे हुए का जन्म निश्चित है।

अब प्रश्न उठता है कि मृत्यु के उपरांत हमारे अर्थात् आत्मा के साथ क्या जाता है जिसकी प्राप्ति के लिए हम मनुष्य प्रयत्न वा पुरुषार्थ करें। इसके लिए कर्म फल सिद्धांत तथा ईश्वरीय न्याय व्यवस्था को हमें समझना होगा। एक ही समय में एक बच्चा सड़क किनारे गरीब की झोपड़ी में और दूसरा समस्त सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण सेठ के घर में पैदा होता है और ऐसा दोनों के पूर्व जन्मों में किए गए कर्मानुसार ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत होता है। अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।। अर्थात् हमें अपने किए प्रत्येक शुभ वा अशुभ कार्य के फल को अवश्य भुगतना पड़ता है। ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत कर्म फल सिद्धांत से यह सिद्ध होता है कि हमारा पुरुषार्थ ह हमारे प्रारब्ध वा नियति का निर्माता है और हमारे द्वारा किए गए कर्म ही संस्कार रूप में मृत्यु के उपरांत ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में फल रूप में हमारे साथ जाते हैं।

इससे यह सिद्ध हुआ कि हम मनुष्य जीवन में शारीरिक सुख-सुविधाओं नश्वर भौतिक संपदा को एकत्रित करने के लिए उनके पीछे भागते हुए दुष्कर्म या पाप रूपी कर्म करने के स्थान पर सच्ची संपति पुण्य परोपकार रूपी सद्कर्मों की ऐसी अमर संपति एकत्रित करे जिससे ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में हमारी अच्छी नियति प्रारब्ध वा भाग्य का निर्माण हो। वह भौतिक संपति तो मात्र शारीरिक इन्द्रिय सुखों के लिए है जबकि सच्चा आत्मिक आनन्द तो अपनी आत्मा को सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा की उपासना में मग्न करके ईश्वरीय आज्ञा पालन करके सद्कर्म करते हुए परम आनन्द अर्थात् मोक्षर की प्राप्ति में है। इसलिए हम अपने जीवन के उद्देश्य को समझकर ईश्वर की आज्ञा पालन करते हुए धर्मानुसार जीवन यापन करके ईश्वरीय उपासना में मग्न रहकर सद्कर्मों की अमर संपति एकत्रित करें जो सदा हमारे कल्याण के लिए हमारे साथ जायेगी।

- 502, जी.एच. 27, सैक्टर-20, पंचकूला

अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल

❐ कृष्णा मोहन गोपाल

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।

कहा जाता है-सरदार भगतसिंह पर जिन दिनों 'एसेम्बली-बम काण्ड' का मुकदमा चल रहा था, तब जेल से कचहरी जाते समय व जोर-जोर से यही गीत गाते हुए जाते थे।

उन दिनों क्या, आज भी आजादी के बाद जब भी सरकार के विरोध में कोई आन्दोलन होता है तो आन्दोलनकारी 'सरफरोशी की तमन्ना' वाला गीत गाना शुरु कर देते है। इस प्रकार हम देखते है कि यह गीत आज भी उतना ही लोकप्रिय है जितना आजादी की लड़ाई के दिनों में था। इस गीत के आगे के चार पद भी इतने ही जोशीले है। अंतिम पद देखिये:-

अब न अगले बलबले है और न अरमानों की भीड़,
एक मिट जाने की हसरत अब दिले 'विस्मिल' में है।

इस अंतिम पद में 'बिस्मिल' शब्द आया है, जिससे स्पष्ट है कि प्रस्तुत गीत के रचयिता बिस्मिल थे-बिस्मिल यानी राम प्रसाद बिस्मिल। ये पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल कवि तो थे ही, साथ ही प्रथम पंक्ति के क्रांतिकारियों में से भी एक थे।

उनके बारे में प्रसिद्ध क्रांतिकारी स्व. मन्मथनाथ गुप्त ने अपने 'क्रांतिकारी-आन्दोलन का इतिहास' में लिखा है-काकोरी षडयंत्र में जिन चार व्यक्तियों को 1927 में फाँसी की सजा दी गई थी, उसमें रामप्रसाद बिस्मिल सबसे पुराने क्रांतिकारी थे। उन पर सबसे ज्यादा अभियोग भी थे, क्योंकि वे क्रांतिकारी दल के हिंसा-विभाग के नेता थे।

राम प्रसाद जी का जन्म उत्तर प्रदेश (तब के संयुक्त प्रांत) के शाहजहांपुर में ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष एकादशी सम्वत् 1958 को हुआ था और वही उनकी शिक्षा-दीक्षा भी हुई। बाद में रामप्रसाद जी ने एक साथी के साथ मिलकर हथियार चलाना भी सीख लिया। तब तक उनमें राजनीतिक जागृति नहीं आयी थी। लेकिन इसी बीच उनके शहर में लोकमान्य तिलक आये और छात्रों और मॉडरेटों में नोंक-झोंक के कारण युवकों ने अलग रास्ता अपनाकर मॉडरेटों की इच्छा के विरूद्ध, लोकमान्य तिलक का शहर में ही अभूतपूर्व स्वागत किया जबकि मॉडरेट उनके नागरिक स्वागत के पक्ष में नहीं थे।

उन्हीं दिनों युवकों में राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए समिति की ओर से एक पुस्तक-'अमेरिका ने अपनी आजादी कैसे प्राप्त की? लिखी गई। पर समस्या थी उसकों छपवाने के लिए पैसे का प्रबंध। तो राम प्रसाद जी ने अपनी माँ से रोजगार करने के नाम पर दो सौ रूपये उधार मांग लिए। उससे पुस्तक छपायी गई, बेची भी गई और इस प्रकार पैसे हाथ में आने पर माँ से उधार प्राप्त दो सौ रूपये भी लौटा दिये गये।

सब हुआ, पर जब अंग्रेजी सरकार को उस पुस्तक की भनक लगी, तो उसने वह पुस्तक जब्त कर ली, फिर भी रामप्रसाद जी येन-केन से लुक-छिप कर पुस्तक बेचते भी रहे। जिस कारण उनमें गिरफ्तारी का परवाना भी निकल आया। इसी बीच में दिल्ली कांग्रेस में शामिल होकर जब लौटे तो उन्हें पता चला कि उनके नाम पर एक और वारंट लिए पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने को ढूंढ़ती फिर रही है क्योंकि सरकार मान रही है कि मैनपुरी षडयंत्र में पण्डित मेवालाल दीक्षित के साथ रामप्रसाद जी भी उसमें शामिल थे। वहाँ से फरार होने में ही उन्हें भलाई दिखी।

एक दिन जब लखनऊ किसी काम से गये तो वहां अचानक उनकी भेंट शचीन्द्रनाथ सान्याल तथा जोगेशचन्द्र चटर्जी से हो गयी। उन्हीं लोगों के आग्रह पर बिस्मिल ''हिन्दुस्तान रिपब्लिन एसोसियशन'' के सदस्य बन गये। इस प्रकार उनका स्थगित कार्य प्रारम्भ हो गया। उन्हें उत्तर प्रदेश का जिला संगठनकर्ता बना दिया गया। उन्हीं दिनों जनता के बीच वितरित कराने के लिए एसोसियेशन की ओर से अंग्रेजी में एक पर्चा छपवाया गया। वितरक का नाम दिया गया 'द रेवोल्यूशनरी'।

उस वितरित किये गये पर्चे के भाव कुछ इस तरह के थे उथल-पुथल से ही नया सितारा उगता है....... पीड़ा और कष्ट से ही नए जीवन का जन्म होता है.... जब हम जागेंगे तो चालाक और शक्तिशाली लोग सीधे-सीधे और कमजोर लोगों के सामने अंचभित हो जाए। नौजवान भारतवासियों! अपने मन के भ्रम को उतार फेकों और साहस के साथ असलियत का सामना करों। अमन-चैन तुम्हें मिल नहीं सकता और शांतिपूर्ण और कानूनी तौर से भारत को आजादी मिलने से रही.... विदेशियों को भारत से खदेड़ना ही पड़ेगा...... क्रांतिकारी इसे भूलेगें नहीं कि किसी भी राष्ट्र का निर्माण उन हजारों अनजाने देशवासियों के बलिदान से होता है जो अपने सुख, स्वार्थ से अधिक की परवाह करते है। इतना सब लिखा होने के बाद अन्त में लिखा था-विजय कुमार, अध्यक्ष सेन्ट्रेल काउंसिल, 'दि रिपब्लिकन पार्टी।

इस काण्ड के संबंध में बिस्मिल जी ने अपनी ''आत्मकथा'' में लिखा है-''काकोरी डकैती बाद पुलिस सक्रिय हो गयी। पुलिस के कुछ विशेष सदस्य मुझ से भी मिले। कुछ मित्रों ने मुझसे कहा भी कि सतर्क रहो। इसके बाद पुलिस मुझे बिना हथकड़ी डाले गिरफ्तार कर ले गई। कोतवाली मेरे सिवा बस मेरा एक विश्वसनीय मित्र ही जानता था। मुझे आश्चर्य और दु:ख भी हुआ बाद में पता चला शाहजहांपुर में और लोग भी गिरफ्तार हुए है जो अलग-अलग जेलों में रखे गये है। उनमें एक बनारसी लाल ने मुखबिर होकर अपना बयान दे दिया था। मुझ पर दफा 120, 121, 302, 396 के अनुसार अभियोग में मुकदमा चला। सरकार की ओर से आनन्दनारायण मुल्ला इस मुकदमें की पैरवी कर रहे थे। उन्हें रोज पाँच सौ रूपये पारिश्रमिक मिलते थे।

तो इस प्रकार रामप्रसाद बिस्मिल और उनके साथियों के विरूद्ध काकोरी षडयन्त्र सम्बन्धी मुकदमा शुभ हो गया। सरकारी पक्ष के वकील मुल्ला साहेब रहे। श्री मन्मथनाथ गुप्त की पुस्तक ''क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास'' से ऐसी जानकारी मिलती है कि अभियुक्तो की सफाई के लिए पण्डित मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय समिति बनी जिसमें जवाहर लाल नेहरू, गणेश शंकर विद्यार्थी, शिव प्रसाद गुप्त, श्री प्रकाश, आचार्य नरेन्द्र देव आदि का विशेष सहयोग रहा।

अभियुक्त की पैरवी के लिए कलकत्ता से बी.एम.चौधरी बेरिस्टर नियुक्त किये गये। उनकी मदद के लिए गोविन्द बल्लभ पंत, चन्द्रभानु

गुप्त, आर.एफ. बहादुर तथा मोहनलाल सक्सेना जैसे वकीलो ने भागीदारी दी। मुकदमा अट्ठारह महीने तक चला। इस बीच इन राजनीतिक कैदियों के साथ जेल अधिकारियों के अमानुषिक व्यवहार को लेकर सभी ने अनशन भी कर दिया था और वह मुकदमा क्या था वह मुकदमा का नाटक था। फैसले के अनुसार रामप्रसाद बिस्मिल और उनके दो साथियों, राजेन्द्र लाहिड़ी और रोशनसिंह को फांसी की सजा सुनाई गई। अन्य साथियों को काला पानी तथा जेल काटने की सजा मिली।

राम प्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में दिनांक 19 दिसम्बर, 1927 को फासी दे दी गई। दिल्ली के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. उमा शंकर ने अपनी पुस्तक 'आजादी के खातिर' बिस्मिल के फाँसी दिये जाने के संबंध में लिखा है फाँसी के तख्ते पर चढ़कर वे बुदबुदाये थे। मालिक तैरी रजा रहे और तु ही तु रहे,

बाकी न मैं रहुं, न मेरी आरजू रहे।
जब तक है तन में जान, रंगो में लहू रहे,
तेरी ही जिक्र या कि तेरी जुस्तजू रहे॥

फिर उन्होंने अपने हाथ से फंदे को गले में डाल दिया था और ऊँची आवाज में कहा था–'आय विश द डाउनफॉल आफ द ब्रिटिश एम्पायर।

कहते है कि कैदखाने में वे अपनी आत्मकथा लिखते रहे थे, बाद में वह उनके एक मित्र के हाथ लग गई। इतना ही नहीं, यह भी पता चला है कि फांसी के लिए जाने से पूर्व उन्होंने अपने एक मित्र को एक पत्र भी लिखा था। उसमें उन्होंने लिखा था–''19 तारीख को जो कुछ होने वाला है, उसके लिए मैं अच्छी तरह तैयार हूँ। यह है ही क्या? केबल शरीर का बदलना मात्र है। मुझे विश्वास है कि मेरी आत्मा मातृभूमि तथा उसकी दीन सन्तति के नये उत्साह और आज के साथ काम करने के लिए शीघ्र ही फिर लौट आयेगी। उन्होंने एक कविता भी लिखी थी–

यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्त्रो बार भी,
तो भी न मै इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊं कभी।
हे ईश, भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु के देशोपकारक कर्म हो।
यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्त्रो बार भी,
तो भी न मै इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊं कभी।
हे ईश, भारतवर्ष में शत-बार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु के देशोपकारक कर्म हो।
मरते बिस्मिल, रोशन, लहेरी, अशफाक अत्याचार से,
होगे पैदा सैकड़ो उनके रूधिर की धार से।
उनके प्रबल उद्योग से उद्धार होगा देश का,
तब नाश होगा सर्वादा दु:ख शोक के लब-लेश का।

अन्त में यह भी बता दूँ कि फांसी के बाद, बहुत कहा-सुनी करने पर बिस्मिल की लाश उनकी माताजी को सौंप दी गई, जिसे लेकर शहर में जुलूस निकाला गया था। उस जुलूस को बीच में ही रोक उनकी स्नेहमयी वीरांगना माताजी ने जनता के बीच निम्नांकित उद्गार प्रकट किये थे–''आपसे कहने की आवश्यकता नहीं है कि मेरी जैसी माँ संसार में इनी-गिनी है। मेरे राम ने न केवल मेरी कोख की लाज रखी है बल्कि आप सबको रास्ता दिखाया है जिस पर चलकर आप एक-न-एक दिन देश को अवश्य आजाद करा लेगें। मेरे पास देश को देने के लिए कुछ नहीं है। यही राम का छोटा भाई है। इसे मैं जयदेव कपूर के हाथों सौंपती हूँ और उनसे कहती हूँ कि वे इसे भी राम जैसा ही बनाए। यह भी अपने बड़े भाई के पदचिन्हों पर चल हँसते-हँसते फाँसी पर झूल जाए, यही मेरी अभिलाषा है। ''वन्दे मातरम्।

ऐसे थे अमर शहीद बिस्मिल और ऐसी थी उनकी स्नेहमयी वीरागंना माताजी। दोनों हमारे लिए प्रणाम है-अनुकरणीय है।

– 113, बाजार गेट, अमरोहा-244221

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2018 के चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से https://www.facebook.com/AjayTankarawala/ पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

गौ–दान : महा–दान

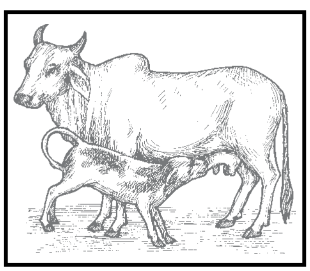

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

मानव जीवन में संस्कारों का महत्त्व

❐ सुशील वर्मा

जन्म से पूर्व हम संस्कारो के बारे में चर्चा कर चुके है। ज्यूं ही बालक जन्म लेता है हमारा यह दायित्व बन जाता है कि जिस सन्तान को हमने सुसंस्कृत बनाने का संकल्प लिया है उसका लालन पालन उसी प्रक्रिया से गुजरे जिसके प्रति हम प्रतिबन्धित हैं।

बालक के जन्म लेने से पहले तीन और जन्म पश्चात एक वर्ष पर्यन्त चार संस्कार और किए जाते है। इस प्रकार एक वर्ष की आयु तक उसके सात संस्कार हो चुके होते हैं। उस तीव्र गति से संस्कारित करने का एक मात्र उद्देश्य यह है कि वह बालक बाहिर के सांसारिक वातावरण के दुष्प्रभावो से बचा रहे।

जातकर्म संस्कार अर्थात् जन्म लेते ही किए जाने वाले कर्म एवं संस्कार। कर्मो में मुख्यत: मुख आदि साफ करना, स्नान करवाना। सुवर्ण श्लाका से घी एवं मधु चठाया जाता है। घी से बुद्धि बढ़ती है। जठराग्नि, बल एवं आयु के लिए हितकर है। वहीं मघु बलदायक, रंग रूप को निखारने वाला व घावों को भरने वाला होता है। परन्तु मघु एवं घी समभाग में नहीं होना चाहिए। घी यदि एक भाग ले तो शहद तीन गुणा होना चाहिए।

संस्कार करते समय सुवर्ण श्लाका से जीभ पर ''ओ३म्'' लिखा जाता है अर्थात् अध्यात्म की तरफ पहला कदम इसके अतिरिक्त बालक के कान में पिता द्वारा यह वचन बोला जाता है ''वेदोडसि'' अर्थात् तूं ज्ञान वाला है, अज्ञानी नहीं। जिस संस्कृति में बालक के जन्म लेते ही कान में मन्त्र फूँक दिया जाता है कि तूँ ज्ञानी है, अज्ञानी नहीं। वहां अनपढ़ता कहां रह सकती है क्योंकि पिता सबके सामने उसे ज्ञानी बनाने का दायित्व लेता है।

नामकरण संस्कार: संस्कारों की श्रृंखला में यह पांचवा संस्कार है। विश्व के हर कोने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में वैदिक या अवैदिक रीति से अथवा अन्य किसी रूप में यह संस्कार मनाया जाता है क्योंकि बालक को सम्बोधन करने के लिए नाम की तो आवश्यकता होती ही है।

श्री हरिशरण सिद्धान्तालंकार जी लिखते है कि ''जो हम मन में सोचते है वही वाणी द्वारा शब्द से बोलते हैं और जो शब्द से बोलते हैं वहीं कर्म से करते है। ऐसे ही विचार Emerson के हैं जो कहते हैं "Word are also actions and actions are a kind of words" हम बालक को नाम देते है वस्तुत: वह शब्द ही होता है जो सारी आयु उसके लिए प्रयोग किए जाने वाला है उस नाम के आधार पर ही हम उसे वैसा बनने की प्रेरणा देते हैं। नहीं तो वही होगा ''आँख के अन्धे नाम नयनसुख''। यह नाम ही तो है जो बच्चों के प्रति हमारी आकाक्षाओं को प्रतिबिम्बित करता है।

इसी संस्कार में यज्ञ करते समय बालक का सिर उत्तर में और पांव दक्षिण में रख गोद में लिया जाता है कारण कि सिर उत्तर में अर्थात् बालक उत्कृष्ठ ज्ञान सम्पन्न हो और पांव दक्षिण में ताकि बालक वामपन्थी न हो, वक्र अथवा कुटिल न हो। उच्च विचारों के प्रतिपादन के लिए ही ऐसे संस्कार सहायक होते हैं। नाम सार्थक हो और बालक के हृदय में उच्च भावना जागृत्त करने वाला हो।

''कोडसि कतमोडसि कस्यासि कोनामासि–सुपोषं पोषै:'' मन्त्र बोलकर बालक का नाम रख से सुखस्वरूप अमरणधर्मा होने का उपदेश दिया जाता है और उसके दीघार्यु होने की कामन की जाती है।

छठा एवं सातवां संस्कार निष्क्रमण एवं अन्नप्राशन संस्कार है। वैसे तो यह छोटे छोटे संस्कार हैं परन्तु इनका महत्त्व भी कम नहीं है। बालक का बाह्य दुनिया से सम्बन्ध स्थापित करना और अन्न खिलाने के लिए ये संस्कार हम उत्सव के रूप में मनाते हैं।

बालक की शारीरिक एवं मानसिक उन्नति के लिए वायु एवं प्रकाश अति आवश्यक है इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए निषक्रमण संस्कार है। ताजी ठंडी हवा और सूर्य की प्राणदायी किरणों का सेवन बालक को जहां विटामिन 'डी' प्रदान करता है वही प्राकृतिक शीत एवं प्राणदायक वायु उसमें नव रक्त का संचार करती है। ''सूर्य आत्मा जगतस्यतस्थुषश्च'' सूर्य जो जड एवं चेतन जगत की आत्मा अर्थात् जीवन है। बालक को सूर्य दर्शन कराने के बाद रात्रि में चन्द्र दर्शन कराया जाता है माता अन्जति में जल लेकर पृथ्वी पर छोड़ देती है अर्थात् चन्द्र जनित मानसिक विकारों को नीचे धकेलना।

बालक की शरीर की वृद्धि के लिए अन्न की आवश्यकता होती है इस प्रक्रिया के लिए अन्नप्राशन संस्कार का आयोजन किया जाता है। द्रव्य भोजन से स्थूल भोजन पर आना एक वैज्ञानिक ढंग से हो। वास्तव में अन्नप्राशन और दान्त निकलने का समय का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है। हल्का अन्न तो बालक को दिया ही जाता है इसके साथ ही मन्त्रों से प्रार्थना की जाती है कि इसके पास अन्न का इतना भण्डार हो कि वह दूसरों को दे सके और अन्न का स्वामी बनें। यही तो संस्कार है जो बच्चे में समाज के प्रति कर्तव्य की भावना पैदा करती है।

एक वर्ष की आयु उपरान्त गुरुकुल (विद्यालय) में प्रवेश से पहले मुण्डन संस्कार और कर्णवेध संस्कार करो उसे गुरु (अध्यापक) को द्विज बनाने के लिए सौंप दिया जाता है। मुण्डन संस्कार जिसे चूड़ाकर्म, केशवपन और क्षौर आदि नामों से जाना जाता है, यह पहिले अथवा तीसरे वर्ष में किया जाता है। इस संस्कार का दान्तों के निकलने से बहुत नजदीक का सम्बन्ध है।

बालक के दूध के 20 दान्त होते हैं जिनमें से एक वर्ष की आयु तक चार उपर के और चार नीचे के दान्त निकल आते हैं। अढ़ाई अथवा तीन वर्ष तक बाकी दान्त निकल कर संख्या 20 हो जाती है। प्रकृति ने पहले आठ दान्त निकलने के बाद आगे के दान्त निकलने में व्यवधान डाल दिया ताकि बालक को लगातार कष्ट न हो। इसी लिए यह संस्कार पहले अथवा तीसरे साल में करने का विधान है। सिर दर्द होना अथवा भारा होना, लार निकलना दस्त लगना आदि परेशानियां बहुत तकलीफ देह होती है क्योंकि बालक के बाल गर्भ में मलिन जल में रहते हैं इसलिए इनका मुण्डन आवश्यक है। फफूंदी, खुजली आदि रोगों से छुटकारा, सिर के भारी होने से सुरक्षा और नए बाल आने में सहायक होना। इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य है।

मुण्डन का अर्थ होता है मस्तिष्क को साफ कर देना। प्राचीन समय में केशों का मुण्डन एक तरह से अविद्या के मुण्डन का प्रतीक था। ब्रह्मचर्य आश्रम प्रवेश करते ही ब्रह्मचारी को प्रवेश करते समय भी सिर का मुण्डन आवश्यक माना जाता था। यह संस्कार मुसलमानों मेंभी ''हकीमा'' नाम से किया जाता है।

इसी श्रृंखला में कर्णवेघ नवम संस्कार है। कात्यायन ग्राह्य सूत्र के

अनुसार यह संस्कार तीसरे अथवा पांचवे वर्ष में करना चाहिए। सुश्रुत कहते हैं कि कर्ण वेघ से बालक की रक्षा होती है। यह रक्षा कैसे हो पाती है? बहुत से लोगों का मत है कि कान के छेद का पेटकी आन्तों से सम्बन्ध है। कर्ण वेद्य से हर्निया बीमारी नहीं होती। यह वैज्ञानिक विधियां जिन्हें हम प्रायः भुला चुके हैं, उनके द्वारा शरीर को स्वस्थ रखा जाता है और साथ ही मानसिक एवं अध्यात्मिक स्तर पर बालक का पथ प्रदर्शन किया जाता है। आज हमारे युवा फैशन के कारण पाश्चात्य की नकल कर एक कान का छेदन करवाते हैं और यदि यही संस्कार के रूप में बालक के कानों का छेदन कराएं तो उसे फूहड समझा जाता है। हमारी यह सांस्कृतिक परम्परा पीछे छुट गई है और हम पाश्चात्य देशों की गुलामी का भार आज भी बड़ी शान से बखूबी ढोए जा रहे हैं।

बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण इसी आयु में किया जाना चाहिए नहीं तो आज इनके उपेक्षित होने के प्रमाण हमारे सामने है। हमारी उच्च कोटि की परम्पराओं को तो हम छोड़ रहे हैं और जिन्हें संस्कारों का महत्व पता ही नहीं उनका हम अनुसरण कर रहे हैं। बालक को द्विज बनाने के बारे में परिचर्चा अगले अंक में।

- M.Sc (Hons.) M.A. Ved (Part-II),
गली मास्टर मूल, चन्द वर्मा, फाजिलका–152123

पुस्तक समीक्षा

अथातो धर्म जिज्ञासा (धर्म के यथार्थ स्वरूप का दार्शनिक विवेचन) लेखक वेद प्रकाश मूल्य–225, पृष्ठ–203, संस्करण जून–2018, प्रकाशक विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद–4408, नई सड़क दिल्ली–110006, दूरभाष–011–23977216

धर्म नामक शब्द से तो सभी मनुष्य परिचित हैं। विभिन्न लोगों की धर्म सम्बन्धी अपनी–अपनी धारणाएं व निष्ठाएं हो सकती हैं, किन्तु इसके बाद भी धर्म नाम संज्ञा से सभी मनुष्य भली भांति अवगत है। यद्यपि यह संज्ञा किस वस्तु की है, इस विषय में गंभीर मतभेद हैं। धर्म के लिए इंग्लिश में रिलीजन, फारसी में मजहब, शब्दों का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी में प्रयोग होने वाला धर्म शब्द मूलतः संस्कृत भाषा का है।

सम्पूर्ण मानव मात्र के लिए उपयुक्त आदर्श सम्बन्धी नियम को ही ''धर्म'' कहा जा सकता है, और यह ईश्वर द्वारा निर्धारित है।'' धर्म नित्य, शाश्वत एवं सार्वकालिक होता है क्योंकि ये जीव के लिए प्रयोज्य है, जो स्वयं नित्य व अनादि है, और इनका नियमनकर्ता ईश्वर भी तो नित्य एवं अनादि ही है। धर्म या मानव धर्म सृष्टिकर्ता द्वारा मान मात्र के लिए विहित आचार संहिता (Prescribed code of conduct) सृष्टिकर्ता द्वारा मनुष्य को कर्म स्वातन्त्रय जैसा विशेषधिकार देने के बाद, उसे कृत्य–अकृत्य कर्मो के निश्चय हेतु मार्ग दर्शन के लिए धर्म की व्यवस्था की गयी है। मनुष्य द्वारा किये गए कर्मो का मूल्यांकन हेतु मापदंड भी यही है। मानव मात्र के लिए सृष्टि के रचनाकार द्वारा विहित धर्म (Prescribed) है क्या? अंहिसा, सत्य, धैर्य, क्षमा, संयम, अस्तेय, पवित्रता, इन्द्रिय–निग्रह, बुद्धि, विद्या आदि मनुष्य मात्र के लिए निर्धारित आचरण सम्बन्धी सार्वभौमिक, सर्वकालिक नियम हैं, जिन्हें धर्म की प्रतिष्ठा है अर्थात् मात्र इन्हें ही धर्म के नाम से सम्बोधित किया जा सकता है। इनके अतिरिक्त जो कुछ भी धर्म के नाम से प्रसिद्ध या प्रचलित हैं वह सब अनर्थक हैं। धर्म का स्वरूप इस पुस्तक का मुख्य अध्याय है, जिसके अन्तर्गत धर्म के सूक्ष्म तत्वों की विस्तृत व्याख्या की गई है। यह पुस्तक बुद्धिजीवी और तार्किक पाठको को अवश्य पसन्द आएगी। इस पुस्तक को पूरा पढ़ने भले ही इसके आशय से पूर्ण सहमत न हो, फिर भी इस निष्कर्ष पर तो अवश्य पहुचेंगे कि लेखक ने विषयवस्तु के साथ पूरा न्याय किया है। इसकी भाषा शुद्ध हिन्दी होने के कारण कुछ पाठकों को कठिन लग सकती है, किन्तु इसकी प्रवाहमय शैली इस कमी को पूरा कर देगी।

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यो की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

–: निवेदक :–

शिवराजवती आर्या (उप–प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

शरीर में स्वयं रोग-मुक्त होने की क्षमता होती है

❒ डॉ. चंचलमल चोरडिया

रोग की तीन अवस्थाएँ होती हैं-शारीरिक, मानसिक और आत्मिक। जिस अवस्था का रोग होता है, उसके अनुरूप यदि उपचार नहीं किया जाता है तो रोग से मुक्ति सम्भव नहीं होती। आजकल अधिकांश व्यक्ति मानसिक और आत्मिक रोगों को तो रोग मानते ही नहीं, क्योंकि मन की एवं आत्मा की शक्ति का न तो उन्हें सम्पूर्ण ज्ञान होता है और न वे उसको जानने एवं समझने का अपेक्षित प्रयास ही करते हैं। शरीर से मन की शक्ति बहुत ज्यादा होती है और मन से आत्मा की शक्ति अनन्तगुणी होती है। जब आत्मा पर आए कर्मों के आवरण दूर हो जाते हैं तो व्यक्ति अनन्तद्रष्टा अर्थात् त्रिकाल द्रष्टा बन जाता है। मन की शक्ति का उस समय आभास होता है जब व्यक्ति को चलने-फिरने में अत्यधिक कष्ट होता है, परन्तु उसके सामने मारणान्तिक भय उपस्थित होने पर वह दौड़ने लग जाता है। शारीरिक वेदना से तड़फने वाले एवं मृत्यु की शय्या पर अन्तिम श्वास गिनने वालों के सामने जब लम्बे समय के पश्चात् कोई स्नेही परिजन मिलने पहुँचता है तो क्षणमात्र के लिए वह सारे दुःख दर्द कैसे भूल जाता है? कहने का तात्पर्य यही है कि चिकित्सा करते समय एक मात्र शरीर को इतना अधिक महत्त्व न दें, जिससे आत्म विकार बढ़ें और मनोबल कमजोर हो। अन्यथा हमारा प्रयास घाटे का सूचक होगा, हमारी प्राथमिकताएँ गलत होंगी। यह तो नौकर को मालिक से ज्यादा महत्त्व देने के समान अबुद्धिमता पूर्ण होगा। अपनी शक्तियों का अवमूल्यन अथवा गलत आकलन करने के तुल्य होगा। ऐसा करना कर्जा चुकाने के लिए ऊँचे ब्याज की दर पर दूसरों से कर्जा लेकर चुकाने के समान गलत आचरण होता है।

रोग के कारणों से बचना आवश्यक

केवल शारीरिक रोगों का ही विचार करें तो, उसके भी अनेक कारण होते हैं। जैसे हमारे पूर्व जन्म के उपार्जित असाता वेदनीय कर्मों का उदय, पैतृक संस्कार, असंयमित, अनियमित एवं अनियन्त्रित जीवन पद्धति, ज्ञानेन्द्रियों का दुरूपयोग, कषाय, प्रमाद एवं अशुभ प्रवृत्तिमय जीवन इत्यादि। पुराने एवं असाध्य रोग की स्थिति में जीव जब से माता के गर्भ में आता है तब से वर्तमान परिस्थितियों तक रोग के कारणों का अध्ययन करना होगा। सभी प्रकार के रोगों की अभिव्यक्ति शरीर में विभिन्न असन्तुलनों के रूप में प्रकट होती है। एक महत्वपूर्ण लोकोक्ति है-'पैर गरम, पेट नरम और सिर ठण्डा, फिर डॉक्टर आवे तो मारो डण्डा' कितनी यथार्थपूर्ण है। अर्थात् जो शारीरिक श्रम करते हैं उनकी पगथली कभी ठण्डी नहीं रह सकती। जिनका पाचन एवं अवांछित तत्त्वों का शरीर से निष्कासन बराबर होता है, उनका पेट प्रायः नरम व स्वच्छ होता है। इसीलिए तो कहा गया है कि 'पेट साफ तो सब रोग माफ'। जो तनाव मुक्त, चिन्ता मुक्त और मस्त रहता है उसका सिर ठण्डा रहता है। अर्थात् शारीरिक श्रम, सुव्यस्थित पाचन एवं तनावमुक्त जीवन पद्धति शारीरिक स्वस्थता के लिए आवश्यक है तथा जितनी-जितनी इनकी उपेक्षा होगी, शरीर में रोगों की संभावना बढ़ती जायेगी। इन सब बातों का पालन व्यक्ति को स्वयं ही करना पड़ता है। बाजार से मिलने वाली दवाइयाँ नहीं कर सकती। अतः स्वस्थ जीवन जीने के लिए व्यक्ति की सजगता, सम्यक् पुरुषार्थ, भागीदारी तथा स्वावलम्बी बनने की तीव्रतम भावना आवश्यक होती है।

जिस प्रकार खेत में बीज बोने से पूर्व उसकी सफाई अति आवश्यक होती है, फूटे हुए घड़े को भरने से पहले उसके छिद्र को बन्द करना जरूरी है, तालाब खाली करने के लिए पानी की आवक रोकना अनिवार्य होता है। ठीक उसी प्रकार रोग के सही कारणों का निदान कर, उनको दूर किये बिना तथा भविष्य में उनसे बचने हेतु स्वास्थ्य के नियमों का पालन किये बिना, हम दीर्घकाल के लिए रोगों से पूर्ण छुटकारा नहीं पा सकते।

सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति कौन सी?

स्वावलम्बी या परावलम्बी? सहज अथवा दुर्लभ? सरल अथवा कठिन, सस्ती अथवा महँगी? प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों पर आधारित प्राकृतिक या नित्य बदलते मापदण्डों वाली अप्राकृतिक? अहिंसक अथवा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा, निर्दयता, क्रुरता को बढ़ावा देने वाली? दुष्प्रभावों से रहित अथवा दुष्प्रभावों वाली। शरीर की प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ाने वाली या कम करने वाली? रोग का स्थायी उपचार करने वाली अथवा मात्र राहत पहुँचाने वाली? सारे शरीर को एक इकाई मानकर उपचार करने वाली अथवा शरीर का दुकड़ों-दुकड़ों के सिद्धान्तों पर उपचार करने वाली?

अच्छी चिकित्सा पद्धति शरीर को स्वस्थ ही नहीं, नीरोग रखती है। अर्थात् जिससे शरीर में रोग उत्पन्न ही न हो। रोग होने का कारण आधि (मानसिक रोग), व्याधि (शारीरिक रोग), उपाधि (कर्मजन्य) विकार होते हैं। अतः अच्छी चिकित्सा तीनों प्रकार के विचारों को समाप्त कर समाधि दिलाने वाली होती है। अच्छी चिकित्सा पद्धति के लिए आवश्यक होता है-रोग के मूल कारणों का सही निदान, स्थायी एवं प्रभावशाली उपचार। इसके साथ-साथ जिस पद्धति में रोग का प्रारम्भिक अवस्था में ही सही निदान हो सके तथा जो भविष्य में रोगों को रोकने में सक्षम हो। जो पद्धति सहज हो, सरल हो, सस्ती हो, स्वावलम्बी हो, दुष्प्रभावों से रहित हो, पूर्ण अहिंसक हो तथा जिसमें रोगों की पुनरावृत्ति न हो। जो चिकित्सा शरीर को स्वस्थ करने के साथ-साथ मनोबल ओर आत्मबल बढ़ाती हो तथा जो सभी के लिए, सभी स्थानों पर सभी समय उपलब्ध हो। अच्छी चिकित्सा पद्धति के तो प्रमुख मापदण्ड यही होते हैं। जो चिकित्सा पद्धतियाँ इन मूल सनातन सिद्धान्तों की जितनी पालना करती हैं, वे उतनी ही अच्छी चिकित्सा पद्धतियाँ होती हैं। अच्छी चिकित्सा का मापदण्ड भीड़ अथवा विज्ञापन नहीं होता, अपितु अन्तिम परिणाम होता है। मात्र रोग में राहत ही नहीं, स्थायी उपचार होता है। दवाओं की दासता से मुक्ति होती है।

चिकित्सा में भ्रम

चन्द समय के लिए तात्कालिक राहत पहुँचाने वाली चिकित्सा को प्रभावशाली चिकित्सा मानना एवं भविष्य में उससे पड़ने वाले दुष्प्रभावों की उपेक्षा करना अपने आपको धोखे में रखना होता है। जिस प्रकार दीमक लगी लकड़ी पर रंग रोगन करने से मजबूती नहीं आ सकती, कचरे को दबाकर अथवा छिपाकर रखने से उसमें अधिक सड़ान्ध एवं अवरोध की समस्या ही पैदा होती है, शत्रु को घर में शरण देना बुद्धिमत्ता नहीं, ठीक उसी प्रकार बाजार में मिलने वाली दवाइयाँ और इंजेक्शन, जो शरीर की प्रतिरोधक शक्ति क्षीण करती है, प्रायः

रोग के कारणों को मिटाने के बजाय उसको दबाने अथवा रोग को अन्य रूप से प्रकट करने का मार्ग प्रशस्त करती हैं, जिनसे कभी-कभी भविष्य में अधिक घातक परिणाम होने की संभावना बनी रहती है। ऐसी स्थिति में रोगी के लिए दवा जीवन का अंग बन जाती है और आलम्बन छोड़ते ही समस्या उग्र रूप धारण करने लग जाती है।

जनसाधारण की ऐसी मान्यता हो गई है कि जितना महंगा उपचार होता है, डॉक्टर की फीस जितनी ज्यादा होती है, उतना ही उपचार प्रभावशाली होता है। भ्रामक विज्ञापन और डॉक्टरों के पास पड़ने वाली भीड़ ही उनकी योग्यता का मापदण्ड बन रही है। वास्तव में अंग्रेजी चिकित्सा का आधार वैज्ञानिक कर्म एवं विज्ञापन ज्यादा है, जिसका मूल कारण शरीर की असीम क्षमताओं के प्रति हमारा अज्ञान और डॉक्टरों के प्रति हमारी अन्ध श्रद्धा ही समझाना चाहिए।

अनन्त शक्ति का स्त्रोतः मानव शरीर

मानव शरीर की संरचना, नियन्त्रण एवं संचालन इस विश्व का सबसे बड़ा आश्चर्य है। आधुनिक विज्ञान की शायद ही कोई ऐसी मशीन है जिससे मिलती-जुलती मशीन हमारे शरीर के अन्दर न हो। मस्तिष्क के जैसा सुपर कम्प्यूटर, हृदय एवं गुर्दे के जैसा शुद्धीकरण, संयंत्र, आमाशय के जैसा रासायनिक कारखाना, लसिका तन्त्र की जैसी सफाई व्यवस्था, नाड़ी तन्त्र की जैसा मीलों लम्बी संचार व्यवस्था, अन्तः स्त्रावी, ग्रन्थियों जैसी प्रशासनिक व्यवस्था, आँखों के जैसा कमरा, प्रकाश की गति से भी तेज गति वाला मन इत्यादि एक ही स्थान पर, अन्यत्र कहीं ढूंढ़ने पर भी मिलने कठिन होते हैं। इससे भी बड़ा आश्चर्य तो यह है कि सारे अंग और अवयव शरीर में व्यवस्थित ढंग से अपना कार्य करते हुए एक दूसरे के साथ पूर्ण सहयोग, समन्वय एवं तालमेल रखते हैं। शरीर के किसी भाग में सुई अथवा पिन चुभने मात्र से सभी ज्ञानेन्द्रियों और मन अपना कार्य छोड़कर उस स्थान पर अपना ध्यान केन्द्रित कर देते हैं तथा जब तक चुभन दूर नहीं होती आंखों से अश्रु, मुँह से आह निकलने लगती है। प्रश्न खड़ा होता है कि जिस शरीर में इतना सहयोग एवं तालमेल हो, क्या उसमें कभी कोई अकेला रोग हमला बोल सकता है? वास्तव में जिस रोग के लक्षण प्रकट होते हैं, वह रोगों के परिवार का नेता होता है और उसके पीछे सैकड़ों अप्रत्यक्ष सहयोगी रोगों का बहुमत होता है, जिनकी तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता। आज रोगों के नाम पर रोगियों को गुमराह किया जा रहा है। रोगों की लम्बी-लम्बी व्याख्यायें की जा रही हैं, परन्तु स्वास्थ्य का मूलाधार गौण किया जा रहा है। मानो पेड़ को सुरक्षित रखने के लिए जड़ को सींचने के बजाय फूल पत्ती को सींचा जा रहा है। शरीर को टुकड़ों-टुकड़ों में बांट कर उसको देखने समझने का प्रयास हो रहा है। जबकि उपचार करते समय जब तक पूरे शरीर को एक इकाई मानकर प्रकट हुए रोग का इलाज नहीं किया जायेगा, तब तक सम्पूर्ण आरोग्य-प्राप्ति की कल्पना मिथ्या है।

जब मानव का निर्माता परिपूर्ण हो तो उसके निर्माण में संकट से बचने के लिए सुरक्षा व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए। आवश्यकता है अपने आपको देखने-समझने एवं स्वयं की क्षमताओं को पहचानने की। अधिकांश असजग लोगों का आचरण अरबपति बाप के भिखारी बेटे के समान होता है, जो स्वयं के पास सुख-सुविधा एवं संकट से बचने के सारे उपाय होने के बावजूद डॉक्टरों और दवाओं के माध्यम से अपना स्वास्थ्य ठीक रखना चाहता है। हमारा ख्याल हमें स्वयं को ही रखना पड़ता है। पाँच मिनट नाक एवं मुँह बंद कर दिया जाये तो हमारी जीवन-लीला समाप्त हो सकती है। परन्तु इतनी अमूल्य श्वास द्वारा प्राण ऊर्जा हमें बिना मूल्य मिल रही है। क्या कभी हमने चिन्तन किया कि हम पूरा श्वास लेते हैं या नहीं? जितना दीर्घ श्वास लेंगे, उतनी ही हमें प्राणवायु ज्यादा मिलेगी। आयु बढ़ेगी और शरीर में नई कोशिकाओं का निर्माण होगा। छोटा सा बालक कैसे श्वास लेता है? जरा ध्यान से देखें एवं उसके अनुरूप श्वास लेने का प्रयास करें। पानी हमें ही पीना पड़ेगा परन्तु पानी कब पीयें? कितना पीयें? कैसे पीयें? क्या इसके बारे में हमारा सम्यक् चिन्तन चलता है?

भोजन में भावों का महत्त्व

हमारा भोजन हमें ही खाना और पचाना पड़ेगा, परन्तु भोजन कैसा हो? कैसे खाया जाए? कहाँ खाया जाए? कब खाया जाए? किसके द्वारा एवं कैसे बनाया जावे? इन बातों की तरफ प्रायः हमारा ध्यान नहीं जाता है। भोजन में आज पौष्टिकता पर तो बहुत जोर दिया जाता है, परन्तु भावों की तरफ तनिक भी ध्यान नहीं दिया जाता है। घर में स्नेही परिजनों द्वारा बनाये गये भोजन में होटलों में मिलने वाले बिना प्रेम के भोजन की अपेक्षा ज्यादा शक्ति होती है। इसी कारण रूखी-सूखी खाने वाला मजदूर, नौकरों द्वारा बनाये गये पौष्टिक आहार लेने वाले अमीरों से ज्यादा शक्तिशाली होता है। आज घर में खाना पसन्द नहीं अथवा बनाते हुए हमें आलस्य आता है। फलतः बाहर खाने को सभ्यता का सूचक समझने की भूल हो रही है। होटलों में बने भोजन में पदार्थो की कितनी शुद्धता, पवित्रता, स्वच्छता का ख्याल रखा जाता है, यह तो जहाँ भोजन बनता है, वहाँ जाकर देखने से स्पष्ट पता लग जायेगा। उस भोजन बनाने वाले के भाव कैसे होते हैं, हम नहीं जानते। इसी कारण आज घर से होटल एवं होटल से हॉस्पिटल रोगों के मंच बन रहे हैं।

यदि आपको कोई घर पर बुलाये, अच्छे से अच्छे पौष्टिक पदार्थो से आपको भोजन करावे, परन्तु यदि आपकी उपेक्षा करे, अथवा भोजन करने के पश्चात् आपसे मात्र इतना सा कहे-'आज तक आपको जिन्दगी में कभी किसी ने ऐसा भोजन कराया?' तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? एवं आपको ऐसा भोजन क्या ताकत देगा। अतः भोजन में भावों की तरंगो का अत्यधिक महत्त्व होता है जिसकी तरफ शायद ही कोई डॉक्टर प्रेरणा देता है।

उपचार हेतु चेतना को सर्वोच्च प्राथमिकता आवश्यक

जीवित मानव शरीर में चेतना की शक्ति होती है, जिससे हमारे मन, इन्द्रियों एवं शरीर की सारी गतिविधियाँ संचालित और प्रभावित होती हैं। चेतना के चले जाने के पश्चात्, शरीर के सभी अंग और अवयव रहते हुए भी उनकी सारी गतिविधियाँ शान्त एवं निष्क्रिय हो जाती है। प्राणवायु, ऊपर से डाला गया रक्त, बाजार में उपलब्ध जड़ी-बूटियाँ, ताकत की दवाइयाँ, केप्सूल, इंजेक्शन जिन्हें हम हमारी ऊर्जा का स्त्रोत मानने का दावा करते हैं, पुनः जीवन संचालन में क्यों प्रभावहीन हो जाते हैं? इसका तात्पर्य यह है कि भोजन, पानी, हवा एवं उपचार के अन्य साधन जीवन संचालन में सहयोगी मात्र होते हैं। बड़े से बड़ा डॉक्टर एवं अच्छी से अच्छी दवा कारगर नहीं होती जब तक शरीर सहयोग नहीं करता। अतः उपचार करते समय चेतना की शक्ति एवं पवित्रता को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए तथा उपचार हेतु काम में लाये जाने वाले साधन एवम् सामग्री यथासंभव अहिंसक और शुद्ध होनी चाहिए।

(शेष पृष्ठ 18 पर)

માતા નિર્માતા ભવતિ

મૂળ હિન્દીમાં લેખક:- કનૈયાલાલ આર્ય

અનુવાદ:- રમેશચન્દ્ર મહેતા

અથર્વવેદમાં કહ્યું છે –
અનુવ્રત: પિતુ: પુત્રો માત્રા ભવતુ સંમના:।
જાયા પત્યે મધુમતીં વાચં વદતુ શાન્તિવાન્॥
(અથર્વ. ૩.૩૦.૨૦૦)

હે ગૃહસ્થિઓ! તમારા ઘરોમાં (પુત્ર: પિતુ: અનુવ્રત:) પુત્ર પિતાના અનુવ્રતી, અનુકૂળ આચરણ કરવાવાળા – આજ્ઞાકારી હોય, અને (માત્રા ભવતુ સમ્મના:) માતા સમાન મનવાળા હોય, (જાયા પત્યે મધુમતીં શાન્તિવાન્ વાચં વદતુ) પત્ની પતિ માટે મધુમયી શાન્તિ આપનારી વાણી બોલે.

મન્ત્રના પ્રથમ પૂર્વાર્દ્ધના પ્રથમ ચરણમાં ત્રણ શબ્દ છે જે ખૂબ જ મહત્ત્વના છે અને જેના કારણે ઘણા બધાં પ્રશ્નોનું સમાધાન થઈ જાય છે. (અનુવ્રત: પિતુ: પુત્રો) પિતાનું કર્તવ્ય છે કે પોતાના પુત્ર કે પુત્રીનું યોગ્ય પાલન-પોષણ કરે. એમને વિદ્યા, સુશિક્ષાથી અલંકૃત કરીને જગતમાં સારા માનવ બનાવીને ઊભા રાખવાના કાર્ય કરે. એવી જ રીતે જે પુત્ર કે પુત્રી છે, એમનું કર્તવ્ય છે કે તેઓ પોતાના જન્મદાતા પિતાને દેવ માનીને એમનું માન-સમ્માન કરે અને એમને અનુકૂળ વ્રતોનું પાલન કરે, એમને અનુકૂળ આચરણ કરે. અર્થાત એમની આજ્ઞાનુસાર આચરણ કરે. આમ કરવાથી બાળકના પિતા પ્રસન્ન થશે અને એમના હૃદયમાંથી સંતાન માટે આશીર્વાદની વર્ષા થશે.

મન્ત્રના પૂર્વાર્દ્ધના બીજા ચરણમાં ત્રણ શબ્દ મહત્ત્વપૂર્ણ છે – (માત્રા ભવતુ સમ્મના:) અર્થાત પુત્ર કે પુત્રી માતા સમાન મનવાળા હોય. અહીં માતાનું કર્તવ્ય છે કે પોતાના પુત્ર કે પુત્રીનું યોગ્ય રીતે પાલન-પોષણ કરે. એમને જીવનના પ્રારંભથી જ હાલરડાઓ કે પછી નાની વાર્તાઓ દ્વારા વિદ્યા-સુશિક્ષા અને ઉત્તમોત્તમ ગુણ, કર્મ સ્વભાવ યુકત બનાવીને જગતમાં ઉત્તમ માનવના રૂપમાં ઊભા કરવાનો શ્રેષ્ઠ પ્રયાસ કરે. એવી જ રીતે સંતાનોએ પણ પોતાની આ જન્મદાત્રી માતાને દેવી માનીને એનું સમ્માન કરવું જોઈએ. બધાએ એક સમાન મનવાળા – એક મનવાળા બનીને બધા કાર્યો કરવા જોઈએ. સર્વદા એવો વિચાર કરીને કાર્ય કરવા જોઈએ કે મારા આ કાર્યોથી બધા સુખી રહે. આવો વિચાર કરીને જ્યારે કર્મ કરશે તો જે કર્મ થશે, એ સદાય શુભ જ થશે, શુભ જ શુભ થશે એને એના કારણે એમની માતાની આત્મા પણ સદાય તૃપ્ત રહેશે તથા હૃદયથી સંતાનોને હંમેશા આશીર્વાદ આપશે.

આ મન્ત્રના ઉત્તરાર્દ્ધમાં વેદનો ઉપદેશ છે – "જાયા પત્યે મધુમતીં શાન્તિવાન્ વાચં વદતુ" પત્ની, પતિ સાથે માધુર્યયુકત અને શાન્તિપ્રદ મધુર વાણીથી વ્યવહાર રાખે. એવી જ રીતે પતિ પણ પત્ની સાથે મધુર અને પ્રેમયુકત ભાષામાં વ્યવહાર કરે. તાત્પર્ય એ છે કે બંનેનો પરસ્પરનો વ્યવહાર અત્યન્ત મધુર, પ્રેમમય અને શાન્તિપૂર્ણ રીતનો હોવો જોઈએ જેથી એમના આવા માધુર્યપૂર્ણ વ્યવહારનો પ્રભાવ એમના સંતાનો પર એવો ઉત્તમ પડે કે તેઓ માતા-પિતા – બંનેની આશાઓ, આકાંક્ષાઓ અને વિશ્વાસોથી દિવ્ય બની જાય, ઉત્તમ બને. આ મન્ત્રના પ્રથમ ચરણમાં જ્યાં એમના જનકને 'પિતા' તથા જનનીને 'માતા' પદથી સ્મરણ કરવામાં આવ્યા છે અને કહ્યું છે કે "માત્રા ભવતુ સમ્મના:" પુત્ર માતા જેવા મનવાળો બને.

આ મન્ત્રના પ્રથમ ચરણમાં જ્યાં જનક માટે 'પિતા'ને તથા જનની 'માતા'ને પદથી સ્મરણ કરવામાં આવ્યા છે અને કહ્યું છે કે "માત્રા ભવતુ સમ્મના:" પુત્ર માતાના જેવા મન વાળો બને. હવે જેવી રીતે 'પિતા' શબ્દથી એવો બોધ થઈ જાય છે કે પિતાના બાળક માટે શું કર્તવ્યો હોવા જોઈએ, એવી જ રીતે માતા શબ્દથી જ એવું જ્ઞાન થઈ જાય છે કે બાળક પ્રત્યે માતાનું ઉત્તરદાયિત્વ શુ છે. 'માતા' નો એક અર્થ થાય છે (માઙ્માને ધાતુમાંથી આ શબ્દ બનતો હોવાથી) એ જણાય છે કે જે માનકર્મી હોય – માન આપવા યોગ્ય હોય. હવે એ સર્વ વિદિત છે કે માતા પોતાના સંતાનનું કેટલું ધ્યાન રાખે છે, એમની ભાવનાઓ અને ઇચ્છાઓ ઉપર શું શું ન્યાછાવર કરી દે છે. માતાનો બીજો ખૂબ જ સરસ અર્થ છે – 'માતા નિર્માતા ભવતિ' અર્થાત માતા સંતાનનું જેવું નિર્માણ કરી શકે છે એવું બીજું કોઈ નથી કરી શકતું. ઋષિવર દયાનન્દે પણ સત્યાર્થપ્રકાશના બીજા સમ્મુલ્લાસમાં લખ્યું છે – "એ સંતાન ભાગ્યશાળી છે જેના માતા-પિતા ધાર્મિક વિદ્વાન્ હોય. માતા-પિતા દ્વારા સન્તાનોને જેટલો ઉપદેશ અને ઉપકાર મળે છે, બીજા કોઈથી એટલો નહીં. જેવી રીતે માતા સન્તાનો પર પ્રેમ અને એમનું હિત કરવા ઇચ્છે છે એટલું બીજું કોઈ નહીં. એટલે યોગ્ય છે કે માતા બાળકને સુશીલતાનો ઉપદેશ આપે. માતા બાળકની નિર્માત્રી હોય છે, એનામાં સદાય એવી ઉત્કૃષ્ટ અભિલાષા રહે છે કે એ બાળકના શ્રેષ્ઠ નિર્માણ માટે સદાય જાગૃત રહે." વેદના શબ્દોમાં આ હૃદયની ટીસ સાથે પ્રભુને પ્રાર્થના કરે છે કે

"મમપુત્રા: શત્રુહણોઽથો મે દુહિતા વિરાટ્"
(ઋગ્વેદ ૧૦.૧૫૯.૩)

અર્થાત મારા પુત્રો શત્રુઓનો નાશ કરવાવાળા હોય, મારી પુત્રી અદ્વિતીય તેજવાળી હોય. એ માત્ર આવી પ્રાર્થના કરીને જ નથી અટકતી, અપિતુ પૂર્ણ પુરુષાર્થ પણ કરે છે કે એના સંતાન જો બ્રાહ્મણ બને તો તેઓ કામ, ક્રોધાદિ અંદરના શત્રુઓ પર દમન કરીને કપિલ, કણાદ, શંકર, દયાનન્દ, શ્રદ્ધાનન્દ જેવા સાચા યોગી, તપસ્વી, ભકત અને વૈદિક ધર્મના અનુયાયી, પ્રચારક - પ્રસારક બને. જો ક્ષત્રિય હોય તો યુદ્ધમાં શત્રુઓનો વિનાશ કરીને પૂર્ણ વિજયને વરવા વાળા હોય. જો વૈશ્ય હોય તો પોતાની અંદરના લોભ પર નિયંત્રણ રાખીને અત્યન્ત પુરુષાર્થ પૂર્વક અર્થોપાર્જન કરીને ઉપાર્જિત ધનનો પોતાની, સમાજની અને દેશની આવશ્યકતાઓની આપૂર્તિ કરવા વાળા હોય. દુર્ભાગ્યે પોતાના સંતાનોને શિક્ષિત ન કરી શકે તો ત્રણે વર્ણની યથાયોગ્ય સેવા કરવા વાળા હોય. જો પુત્રી

રત્ન હોય તો એ એવી હોવી જોઈએ કે જેવો બપોરનો તેજસ્વી સૂર્ય હોય છે અર્થાત એની સામે કોઈ આંખ ઉઠાવીને જોઈ પણ ન શકે, અને જો કોઈ એવું સાહસ કરે તો સિંહણની જેમ એની માન-મર્યાદાને તોડી નાખવા વાળી હોય. એટલું જ નહીં એ મા પોતે જ આમ કરતા કહે છે – "ઉતાહમાસ્મિ સજ્જયા, પત્યૌ મે શ્લોક ઉત્તમ:" (ઋગ. ૧૦.૧૫૯.૩)

હું સમ્યક્ રીતે શત્રુઓ પર વિજય પ્રાપ્ત કરવા વાળી બનું. મારા પતિમાં પણ ઉત્કૃષ્ટ અંશ હોય, મારા પતિ પણ વીરતાને કારણે યશસ્વી હોય. માતા-પિતા વીર હોવાને કારણે જ સન્તાનોમાં પણ વીરતા આવે છે. માતા-પિતાનું જીવન યશસ્વી ન હોય તો સન્તાનું જીવન પણ યશસ્વી નથી હોતું., અર્થાત વીર માતા-પિતા જ વીર યશસ્વી સન્તાનોને જન્મ આપે છે. માતા વેદના શબ્દોમાં પોતાના કર્તવ્ય ધર્મની ઘોષણા કરતા કહે છે – "અહં કેતુરહં મૂર્ધાહમુગ્રા વિવાચની। મમેદનુ ક્રતું પતિ: સેહાનાયા ઉપાચરેત્॥" (ઋગ. ૧૦.૧૫૯.૨) આદર્શ માતા કહે છે કે (અહં કેતુ:) હુ જ્ઞાનવાળી બનું છું, (અહં મૂર્ધા) હું મારા ક્ષેત્રમાં શિખર પર પહોંચવાના પ્રયત્નો કરું છું, (અહં ઉગ્રા) હું તેજસ્વિની બનું છું એટલે કે હું મારા મસ્તિષ્કમાં, મનમા શિખર પર પહોંચવાની ભાવના વાળી તથા શરીરમાં તેજવાળી, સદાય પ્રભુના નામનો જાપ કરવાવાળી આદર્શ માતા બનીને મારા સન્તાનનું નિર્માણ કરવા ઇચ્છું છું. તદોપરાંત એ મા પોતાના પતિ પાસે પણ આવું જ આશ્વાસન પણ ઇચ્છે છે. (સેહનાયા:) કામ, ક્રોધ, આદિ શત્રુઓ પર વિજય પ્રાપ્ત કરવાવાળી (મમ) મારા (ક્રતું અનુ) સંકલ્પાનુસાર (ઇત્) જ (પતિ:) મારા પતિ (ઉપાચરેત્) કાર્યોને કરવા વાળા છે. એટલે કે માતા તેજસ્વિની તેમજ શાંત સ્વભાવ વાળી હોય, ક્રોધ આદિથી સદાય દૂર રહેવા વાળી હોય અને તદાનુસાર એના પતિ એને સહયોગ આપવા વાળા હોય, ત્યારે જ સન્તાનનું ઉત્તમ નિર્માણ થઈ શકે.

સાચી માતા પોતાના આજ ઉત્તમ ગુણોને કારણે માતા કહેવાને લાયક છે, ન કે માત્ર દાળ, ભાત, શાક રોટલી બનાવી, ખવડાવવા – પિવડાવવા માત્રથી. કારણ કે આવી જવાબદારી તો પશુઓ પણ લેતા હોય છે. મુખ્ય રૂપમાં તો સન્તાનને જન્મ અને નિર્માણ જ માતાનું કાર્ય છે. ઇતિહાસમાં આવું જ કાર્ય માતા જીજાબાઈએ શિવાજીનું નિર્માણ કરવાનું, તો માતા કૌશલ્યાએ શ્રી રામનનું નિર્માણ કરવાનું અને યશોદાએ શ્રી કૃષ્ણનુ નિર્માણ કરવાનું કર્યું હતું. આવી જ વિશેષતાઓને કારણે માતાને શાસ્ત્રમાં 'દેવ' અર્થાત્ દેવતાની ઉપમા આપવામાં આવી છે અને પુત્રને કહ્યું છે કે 'માતૃદેવો ભવ' તું પ્રભુ કૃપાથી એ માતાને દેવતા માનીને એની પૂજા એટલે કે યોગ્ય સમ્માન કર અને એની ઇચ્છાનુસાર શ્રેષ્ઠ ચરિત્રનો સ્વામી બન.

મહર્ષિ મનુ ભગવાને (૨.૧૪૫) માતાને ઉપાધ્યાયો, આચાર્યો, અને ત્યાં સુધી કે પિતૃઓ કરતા પણ ઉત્કૃષ્ટ સ્થાને ઊભી કરી દીધી છે. તેઓ લખે છે –

ઉપાધ્યાયાન્દશાચાર્ય આચાર્યાણાં શતં પિતા।
સહ તુ પિતૃન માતા ગૌરવેણાતિરિચ્યતે॥

(દશ ઉપાધ્યાયાયાન્ આચાર્ય:) દસ ઉપાધ્યાયોની તુલનામાં આચાર્યનું, (આચાર્યાણાં શતં પિતા) સો આચાર્યોની અપેક્ષાએ પિતાનું (તુ) અને સહસ્ર પિતૃન્ તુ માતા) પિતા કરતા હજાર ગણી માતા (ગૌરવેણ અતિરિચ્યતે) ગૌરવમાં વધારે છે.

(જોકે ડૉ. સુરેન્દ્ર કુમારજીએ વિશુદ્ધ મનુસ્મૃતિમાં આ શ્લોકને પ્રસંગ-વિરોધ અને અન્તર્વિરોધને કારણે પ્રક્ષિપ્ત માન્યો છે., પરંતુ માની મહત્તા બતાવવામાં આ શ્લો મહત્ત્વપૂર્ણ છે.

વૈદિક સંસ્કૃતિ અને સભ્યતામાં નારીને ઉચ્ચ સ્થાન પ્રાપ્ત છે, એમાં નારીના વિભિન્ન રૂપોમાં એની મહત્તાનું વર્ણન છે. પરંતુ નારીનું મા રૂપ વિશેષ મહત્ત્વનું છે. એ સમાજને એક યોગ્ય સન્તતિના રૂપમાં પોતાનું વિશિષ્ટ યોગદાન આપે છે. આવા સન્તાન એક સમ્પુષ્ટ સમાજના નિર્માણમાં સહયોગ કરવા વાળી હોય છે એમ કહેવું સનાતન સત્ય છે –

માતા નિર્માતા ભવતિ.

ऋषि जन्मभूमि की गौशाला के मूक सेवक बटुक भाई

श्री बटुक भाई टंकारा के निकट के एक छोटे से गाँव मोटा खिजडीया के किसान है। क्षत्रिय परम्परा में जन्मे बटुकभाई का पुत्र-पुत्रियां-पत्नी पोते आदि से हरा-भरा परिवार हैं। गाँव में कृषि की जमीन भी है।

विगत लगभग 30-35 वर्षो से आप ऋषि जन्मभूमि टंकारा में श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट की गौशाला की खेती कार्य में नि:स्वार्थ भाव से अपनी सेवायें देते हैं। टंकारा से आपका गाँव लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर होने के बावजूद अधिकांश तो पैदल ही पहुंच जाते है, जब भी बुलावा भेजते है उपस्थित हो जाते है। पारिश्रमिक, मजदूरी आदि जबरदस्ती देनी पड़ती है। यदि कुछ देते भी है तो गौ के लिए चारा, पंछियो के लिए दाना आदि पर खर्च कर देते हैं। स्वयं नि:स्पृह रहते है। सादा कपड़े, सादा भोजन आदि से ही सन्तुष्ट है। ऐसे बटुक भाई किसी योगी, सन्त साधु से ज्यादा त्यागी तपस्वी है।

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के आचार्य एवं ब्रह्मचारी आपका साधुवाद कर आपकी सेवाओं का ऋण स्वीकार करते है।

समाचार दर्पण

महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय (टंकारा) एवम् महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल

प्रवेश प्रारम्भ

अपने बच्चों को विद्वान्, चरित्रवान तथा संस्कारी बनाने के लिए ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा के गुरुकुल में प्रवेश करवायें। योग्यता-ब्रह्मचारी शरीर तथा मन से स्वस्थ होना चाहिए।

शैक्षणिक योग्यता- कक्षा 7, 8 अथवा 10वीं पास। केवल लड़कों के लिए गुरुकुल है। प्रवेश की संख्या सीमित है। अपना आवेदन 15 जून 2018 से पहले भेजने का कष्ट करें। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक हरियाणा से सम्बन्धित है। विशेष जानकारी के लिए पत्र लिखें अथवा गुरुकुल के आचार्य जी से फोन पर सम्पर्क करें और आने से पूर्व आचार्य जी से आज्ञा लेवें। (केवल आमन्त्रित ब्रह्मचारी ही आवें।) प्रवेश से पूर्व परीक्षा ली जायेगी। उत्तीर्ण ब्रह्मचारी ही प्रवेश के योग्य माने जायेंगे। कम्प्यूटर शिक्षा का भी प्रबन्ध।

अध्यापकों की आवश्यकता

प्राच्य व्याकरण पद्धति से, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) के माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा अनुमोदित पाठयक्रम के अनुसार दसवी कक्षा तक साइंस और गणित पढ़ाने में योग्यता प्राप्त हो। ❑ शास्त्री वर्ग के छात्रों को काशिका, नामिक, अष्टाध्यायी आदि पढ़ा सके। अध्यापकों की आवश्यकता है। वेतनमान योग्यतानुसारा। आवास-भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल में निःशुल्क होगी। गुरुकुल के आचार्य जी को अपनी योग्यतादि के विवरण, चित्र एवम् आधार कार्ड सहित आवेदन भेजे।
आचार्य रामदेव जी

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,
डाकखाना-टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात), पिन-363650, मो. 09913251448

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल

आर्य कन्या गुरुकुल का 10वीं का परीक्षा परिणाम अति उत्तम रहा

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल में 2017-18 का दसवीं का परीक्षा परिणाम अति उत्तम रहा। इस गुरुकुल की 3 ब्रह्मचारिणियों ने मैरिट सूची में स्थान प्राप्त किया। **कुल परीक्षाथी-27, उत्तीर्ण परीक्षार्थी-27, प्रथम श्रेणी-27, कुल पास%-100 प्रतिशत। राज्य में मैरिट-3**

90% से 97.38% अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं की संख्या-**11**, **80% से 89.69%** अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं की संख्या-**10**, **71.38% से 79.69%** अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं की संख्या-**6**,

राज्य में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राएं:- श्वेता कुमारी (प्राप्त अंक 633/650, प्रतिशत-97.38%, राज्य में 6वां स्थान, जिले में 3वां स्थान), **श्वेता भारती** (प्राप्त अंक 628/650, प्रतिशत-96.62%, राज्य में 11वां स्थान, जिले में 6वां स्थान), **रश्मि कुमारी** (प्राप्त अंक 612/650, प्रतिशत-94.15%, राज्य में 27वां स्थान, जिले में 22वां स्थान)।

100 अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं की संख्या- गणित में 6 छात्राएँ और विज्ञान में 1 छात्रा।

जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य वीर दल मुम्बई द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के संरक्षण में निर्माण शिविर ओसवाल जैन छात्रालय माटुंगा मुम्बई में आयोजित किया गया। जिसमें लगभग 135 बच्चों ने भाग लिया। शिविर का शुभारम्भ श्रीमती सरोजनी गोयल प्रधाना आर्य महिला समाज मांटुगा एवं श्री वेदप्रकाश जी गर्ग प्रधान आर्य समाज चेम्बूर के कर कमलों से ध्वजारोहण के साथ हुआ। शिविर का संचालन आचार्य नरेन्द्र शास्त्री संचालक-आर्य वीर दल मुम्बई ने किया। व्यायाम शिक्षक श्री सौरभ आर्य, प्रशान्त आर्य (दिल्ली), मनोज आर्य, अशोक आर्य एवं पवमान आर्य मुम्बई ने पूर्ण निष्ठा से बच्चों को व्यायाम, योगासन, प्राणायाम, जूडो-कराटे, धनुर्विद्या, स्केटिंग, संध्या हवन, नैतिक शिक्षा, वैदिक गणित, वैदिक सभ्यता, संस्कृति व महापुरूषों के जीवन चरित्र तथा सम्पूर्ण विकासादि का प्रशिक्षण दिया। शिविर का समापन समारोह बड़े ही उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह जीने सभी आर्य वीरों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि इस प्रकार के शिविरों के माध्यम से ही बच्चों को अच्छे संस्कार मिलते हैं।

संस्कार विधि पर दूरदर्शन धारावाहिक

आर्य समाज कलकत्ता ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित संस्कार विधि पर दूरदर्शन के लिए एक धारावाहिक लिखवाने का निर्णय लिया है, जिससे हमारी युवा पीढ़ी को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गए संस्कारों की सही-सही जानकारी हो सके। **जो भी विद्वान या विद्वानों का समूह संस्कार विधि पर धारावाहिक लिखने को इच्छुक हैं, वे सभी विद्वान आर्य समाज कलकत्ता से सम्पर्क करें।** धारावाहिक में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गये सिद्धांतों को मनोरंजक ढंग से दिखाए जाए जिससे यह सभी उम्र के लोगो के लिए रूचिकर हो। सिद्धांतो से किसी प्रकार का समझौता नहीं होगा। सभी संस्कार विस्तार रूप में शंका समाधान सहित लिखा जाए। धारावाहिक 108 कड़ियाँ या इससे अधिक की हो। इस धारावाहिक पर आर्यजगत् के 5 विद्वानों की समिति इसका निर्णय लेगी। सभी विद्वानों को वर्तमान समयानुसार पारिश्रमिक दिया जाएगा। इस धारावाहिक पर आर्य समाज कलकत्ता का सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा। कॉपी राईट भी आर्य समाज कलकत्ता का ही होगा।

46वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर-7 का 46वां वार्षिकोत्सव में बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गयी, इस अवसर पर आर्य जगत से सुप्रसिद्ध साध्वी डॉ. उत्तमा यती जी (अजमेर), आचार्य रामप्रसाद जी (कानपुर देहात), पं. संदीप वैदिक (मुजफ्फरपुर), पं. राम सेवक आर्य प्रज्ञाचक्षु (हमीरपुर) आदि अनेक उपदेशक, भजनोपदेशक, सन्यासी व वानप्रस्थी आदि उपस्थित थे। उपदेशकों ने बताया कि आर्य जाति की उन्नति आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं स्वामी दयानन्द के वेदोक्त विचारों से ही संभव है। इस अवसर पर 100 सत्यार्थ प्रकाश केवल मात्र 30 रूपया में उपलब्ध कराया गया। जिसके लेने वालों का उत्साह देखते ही बनता था। इस अवसर पर ऋषि लंगर का आयोजित किया गया जिसको पाकर सभी तृप्त हुए।

संस्कृत शिक्षा के विस्तार हेतु

दिल्ली संस्कृत अकादमी (दिल्लीसर्वकार:) दिल्ली में संस्कृत शिक्षा के विस्तार हेतु संस्कृत-केन्द्रों के माध्यम से संस्कृत कक्षाओं का संचालन करना चाहती है। जोकि प्रतिदिन सायं 4 से 6 बजे तक नि:शुल्क स्थानों पर आयोजित किये जाएगें। यदि आप अपने समाज में उक्त कक्षा को आयोजित करना चाहते हैं तो डॉ. जीतराम भट्ट, सचिव, संस्कृति अकादमी दिल्ली के नाम 15 जून के पहले-पहले सम्पर्क करें। अकादमी को प्रेषित पत्र की एक प्रति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को भी प्रेषित करें या मेल कर देवें।

-विनय आर्य, महामन्त्री, मो.09958174441

> उस सर्वव्यापक ईश्वर को योग द्वारा जान लेने पर हृदय की अविद्यारूपी गांठ कट जाती है, सभी प्रकार के संशय दूर हो जाते है और भविष्य में किये जा सकने वाले पाप कर्म नष्ट हो जाते है अर्थात् ईश्वर को जान लेने पर व्यक्ति भविष्य में पाप नहीं करता।
>
> – स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्य कन्या आत्मरक्षा प्रशिक्षण सम्पन्न

जयपुर, छह दिवसीय **आर्य कन्या संस्कार निर्माण शिविर, मुहाना मंडी रोड, सैनी नर्सिंग कॉलेज** में भव्य समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण शिविर के उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि, शिक्षाविद् आर.सी. शर्मा, डायरेक्टर, रिया-इंटरनेशनल थे। प्रशिक्षण का आरंभ, 'बेटी बचाओ अभियान के लिए' सम्मानित बहन पूनम आर्या तथा संयोजन बहन प्रवेश आर्या द्वारा हुआ।' शिविरार्थिनीयों को आत्म रक्षार्थ लाठी प्रचालन का अभ्यास तथा कराटे की विधियाँ समझाई गई। बौद्धिक विकास एवं आत्मबल जाग्रतार्थ सन्ध्या-उपासना का महत्व साभ्यास समझाया गया। समापन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि जस्टिस प्रशान्त अग्रवाल ने कहा कि देश में घटित घृणित-घटनाएँ निदंनीय, दुर्भाग्यपूर्ण हैं और अशोभनीय भी। बेटियों को अपरिचितों की, अपेक्षा खतरा, परिचितों से होता है। ऐसी अनायास परिस्थितियों से निपटाने में आत्म रक्षार्थ प्रशिक्षणि ही उपाय हैं। प्रशिक्षण शिविर के कुशल-संचालन में संयोजक श्रीमती सुधामित्तल, समन्वयक, डॉ. प्रमोद पाल, स्वागताध्यक्ष डॉ. सुमित्रा आर्या एवं सुनील अरोड़ा व सतीश मित्तल की महती भूमिका रही। प्रभावी मंच संचालन यश द्वारा हुआ। शान्तिपाठ के पश्चात् ऋषिलंगर के साथ समारोह का विसर्जन हुआ।

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र) में कक्षा छठवीं एवं सातवीं में योग्य विद्यार्थियों हेतु प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। इच्छुक दिनांक 15 जून से 15 जुलाई 2018 के बीच में आने वाले प्रत्येक रविवार में मौखिक व लिखित परीक्षा दिलवाकर छात्रों को प्रवेश करवा सकते हैं। जानकारी हेतु निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें-09907056726, 09424471288

आचार्य सत्यसिन्धु आर्य, प्रधानाचार्य, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, होशंगाबाद

चुनाव समाचार

आर्य समाज वैशाली नगर, जयपुर-302021

प्रधान- डॉ. मोती लाल शर्मा **मन्त्री**- श्री आशीष मिनोचा

कोषाध्यक्ष- श्री जे.एन. चोपड़ा

आर्य समाज सज्जन नगर, उदयपुर (राज.)

प्रधान- श्री हुकमचन्द शास्त्री **मन्त्री**- श्री हेमांग जोशी

कोषाध्यक्ष- श्री अशोक उदावत

आर्य समाज नोएडा-201301

प्रधान- श्रीमती ओमवती गुप्ता **मन्त्री**- श्रीमती आदर्श विश्नोई

कोषाध्यक्ष- श्रीमती संतोष लाल

> (1) जो परमात्मा और जीवात्मा का यथार्थ ज्ञान, जो आलस्य को छोड़कर सदा उद्योगी, सुखद: खादि का सहन, धर्म का नित्य सेवन करने वाला, जिसको कोई पदार्थ धर्म से छुड़ा कर अधर्म की ओर न खेंच सके वह पण्डित कहाता है।
>
> (2) सत्यासत्य का निर्णय करने के लिए परस्पर वैर-विरोध छोड़कर संवाद करना विद्वानों का कर्तव्य है।
>
> – स्वामी दयानन्द सरस्वती

कैसे बचें मांसपेशियों से संबंधित समस्याओं से?

शरीर को स्वस्थ-सबल बनाए रखने के लिए मांसपेशियों का मजबूत होना बेहद जरूरी है। कई ऐसे कारण व परिस्थितियां हैं, जो मांसपेशियों को प्रभावित करके स्वास्थ्य को क्षति पहुंचाती हैं। अतः इस संदर्भ में विशेष रूप से सावधानी बरती जानी चाहिए।

मांसपेशियों की कमजोरी के लिए मुख्यतः निम्नलिखित कारण उत्तरदायी हो सकते हैं-

❏ बढ़ती उम्र में मांसपेशियों का क्षरण होने लगता है। ❏ शारीरिक श्रम न करने से मांसपेशियां कमजोर होती हैं। ❏ नियमित रूप से पर्याप्त नींद न लेने से मांसपेशियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ❏ देर तक लगातार एक ही स्थान पर बैठे रहना भी मांसपेशियों के लिए नुकसानदेह है। ❏ धूम्रपान और मद्यपान से मांसपेशियां कमजोर होती हैं। ❏ मधुमेह, आर्थराइटिस आदि जटिल रोग भी मांसपेशियों को कमजोर करते हैं।

मांसपेशियों की कमजोरी का दुष्प्रभाव कई रूपों में भुगतना पड़ सकता है। मांसपेशियां कमजोर होने पर थकान महसूस होती है, फलतः शरीर की कार्यक्षमता प्रभावित होती है, चलने, खड़े होने व बैठने में कठिनाई होती है, मुस्कराने व चेहरे के भावों को व्यक्त करने में परेशानी होती है तथा बोलने व समझने में भी परेशानी हो सकती है। यदि सीने की मांसपेशियां कमजोर हो जाएं, तो सांस लेने में कठिनाई होती है और एकाग्रता पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

मांसपेशियों से संबंधित उपरोक्त समस्याओं से सुरक्षा हेतु तथा मांसपेशियों को मजबूत बनाने के लिए कुछ उपयोगी सुझाव निम्नलिखित हैं-

❏ प्रचुर मात्रा में पानी पीएं। ❏ नियमित रूप से शारीरिक परिश्रम व व्यायाम करें। ❏ मांसपेशियों की कमजोरी में चुकंदर का रस विशेष रूप से लाभदायी है। ❏ विभिन्न पोषक तत्वों से युक्त संतुलित आहार लें। ❏ अधिक तले-भुने व मिर्च-मसालेदार पदार्थ, जंक फूड, फास्ट फूड आदि न लें। ❏ फल-सब्जियों का सेवन प्रचुर मात्रा में करें। ❏ धूम्रपान, मद्यपान व अन्य मादक पदार्थों से दूर रहें। ❏ मोटापा बढ़ने से भी मांसपेशियां कमजोर होती हैं, अतः मोटापा से बचें और मोटापा होने पर इसे नियंत्रित करें।

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

भारत की राजधानी दिल्ली में फिर से जुड़ेगा विश्वभर के आर्यों का महाकुम्भ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली

25, 26, 27, 28 अक्टूबर, 2018

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25 से 28 अक्टूबर 2018
दिल्ली

विश्व के सभी आर्यजनों से अपील

❖अभी से महासम्मेलन की तैयारियों में जुट जाएं आर्यजन। ❖ इन तिथियों में कोई भी आर्य समाज अपना कार्यक्रम आयोजित न करें। ❖ आर्यसमाजें अपने कार्यक्रमों हेतु प्रकाशित पत्रक में आर्य महासम्मेलन की जानकारी अवश्य करें। ❖ जो युवा कार्यकर्ता 23 अक्टूबर से 29 अक्टूबर 2018 तक सम्मेलन के आयोजन में समय दे सकें, वे जल्द से जल्द सूचित करें। ❖ आर्यजन अपने महासम्मेलन सम्बन्धी पत्र कम से कम तीन प्रतियों में भेजें। इनमें मुख्यतः तीन समितियों के संयोजकों- परिवहन, बाजार और आवास के नाम अलग-अलग सम्बोधित होने चाहिए।

विश्व के सभी आर्यजन आर्य महासम्मेलन में सादर आमन्त्रित हैं। समस्त पाठकों, आर्यसमाज के अधिकारियों व सदस्यों से अपील है कि महासम्मेलन की सूचना अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति तक अवश्य पहुंचाएं।

महासम्मेलन के सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें

संयोजक, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; दूरभाष : 011-23360150, 23365959; 9540029044
Email : aryasabha@yahoo.com; website www.aryamahasammelan.org; www.thearyasamaj.org

वैदिक आदर्शों द्वारा ही समाज का संरक्षण

❑ डॉ. भारतेन्दु द्विवेदी

वर्तमान समय में समाज में परिवर्तन अत्यन्त तीव्रता के साथ परिलक्षित हो रहा है। कम्प्यूटर और इन्टरनेट की दुनियाँ में मनुष्य एक मशीन बनता जा रहा है। समाज पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का अन्धानुकरण कर रहा है। धन और विलासिता की चकाचौंध में आकर्षित होकर भागा जा रहा है। वह अपने अस्तित्व को भी खो रहा है। येन केन प्रकारेण, धनोपार्जन और विलासितापूर्ण जीवन यापन जीवन का अंग बनता जा रहा है। समाज से भी वह अलग होता जा रहा है। स्वयं में केन्द्रित होने के कारण उसके अन्दर मानवीय संवेदनाएं भी समाप्त हो रही हैं। समाज का कुछ वर्ग नशा मदिरा का शिकार होता जा रहा है। अत: परिवार और समाज का स्वरूप बदल रहा है। इन परिस्थितियों ने अनेक विकृतियों को जन्म दिया है। जिससे समाज के समक्ष अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। परिवार और समाज में विघटन की स्थिति उत्पन्न हो रही है। व्यक्ति में मानसिक शान्ति का अभाव है। पाश्चात्य देश मानसिक शान्ति के लिए भारत की ओर दृष्टि लगाए हुए हैं। अध्यात्म की ओर उनकी प्रवृत्ति बढ़ रही है। वे भौतिकता को त्यागकर मानसिक शान्ति के लिए अग्रसर होने के इच्छुक हैं।

भारत विश्वगुरु कहा जाता है। भारत से ही ज्ञान विज्ञान का प्रसार हुआ। भारतीय संस्कृति को 'सा प्रथमा संस्कृति: विश्वारा' कहा जाता है। सृष्टि के प्रारम्भ में मानव कल्याण के लिए वेदों को ऋषियों के माध्यम से ईश्वर ने प्रदान किया था। एक समुन्नत समाज की स्थापना हेतु आवश्यक उपदेश दिए थे तथा मनुष्य के लिए आवश्यक कर्तव्यों का विधान किया था। ऋषियों ने इसी आधार पर भारतीय समाज की स्थापना की थी। एक विशाल भवन की नींव के समान ईश्वर प्रदत्त ज्ञान से समाजरूपी भवन की नींव रखी गई थी। यही कारण है कि अनेक आक्रमणों और प्रहारों को सहने के बाद भी भारतीय संस्कृति के मूल्यों पर आधारित समाज विश्व में अपना एक अस्तित्व बनाए हुए है। यदि यह नींव कमजोर होती तो समाज कब का विखर चुका होता, साथ ही राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का सूत्र भी टूट जाता।

वेदों में समुन्त समाज की परिकल्पना कर समाज को समुन्नत बनाने, प्रगतिशील बनाने और उत्कर्ष की ओर ले जाने का मार्गदर्शन प्राप्त होता है। समाज को संगठित बनाने के लिए ऋग्वेद का संज्ञान सूक्त संगठन की भावना को जागृत करता है।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे, संजानाना उपासते।।

ऋग्वेद 10.191.2

समाज में आज व्याप्त ऊँच-नीच की भावना को समाप्त करने के लिए वेदों में निर्देश है कि समाज में ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं होना चाहिए। भ्रातृभाव से संगठित समाज ही उन्नति करता है।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते, सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।।

ऋग्. 5.60.5

समाज को उन्नत बनाने के लिए आवश्यक है कि समाज का कोई वर्ग उपेक्षित न रहे तथा कोई भूखा प्यासा न रहे। सभी निर्भय होकर रहें।

इन्द्रेण दत्तो वरूणेन शिष्टो, मरूद्भिरूग्रः प्रहितो न आगन्।
एष वां द्यावापृथिवी उपस्थे, मा क्षुधन्मा तृषत्।।

अथर्व. 2.29.4

वैदिक ऋषियों ने जहाँ मनुष्य के कल्याण की कामना की थी वहीं समाज के आवश्यक अंग पशुओं की भी निरोगता की कामना की थी।

द्विपाच्चतुष्पादस्माकं सर्वमत्वनातुरम्। ऋग् 10.97.20

शिक्षित समाज की आवश्यकता अनुभव करते हुए निर्देश दिया था कि समाज में शिक्षा का प्रसार हो, शिक्षित-अशिक्षितों को शिक्षा और ज्ञान प्रदान करे।

केतुं कृण्वत्रकेतवे, पेशो मर्या अपेशसे।
सुमुषद्भिरजायथाः।। ऋग्. 1.6.3

एक ओर माता-पिता के द्वारा पुत्रों का संरक्षण करने तथा दूसरी ओर माता-पिता की सेवा पुत्रों द्वारा किए जाने का निर्देश है। आज समाज में यह बहुत समस्या का रूप ले रहा है। माता-पिता को कहा गया है कि वे सन्तान को योग्यतम बनाएं।

सुरेतसा पितरा भूम चक्रतुरूरू प्रजाया अमृतं वरीमभिः।

ऋग्. 1.159.2

पुत्र के लिए उपदेश है कि वह पिता के अनुकूल कर्म करने वाला हो और माता के साथ समान मन वाला हो।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः। अ. 3.30.2

एक अन्य स्थान पर माता-पिता के कल्याण की कामना की गई है।

स्वस्ति मात्र उते पित्रे नो अस्तु। अ. 1.31.4

यदि हम चाहते हैं कि हमारा राष्ट्र सुदृढ़ हो। समाज संगठित हो, परिवार में सामंनस्य हो तो आवश्यक है कि हमें उन प्राचीन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाते हुए प्रगति और उन्नति की ओर अग्रसर होना होगा। अपनी प्राचीन संस्कृति के सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाए बिना अपनी संस्कृति की भी रक्षा सम्भव नहीं है।

- का.न. रा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर (भदोही)

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर है। यह गुरुकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अतः समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि गुरुकुल में बालिकाओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

सम्पर्क करें :

आचार्य प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरुकुल,
दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401
फोन : 01495-270503, मो. 09416747308

(पृष्ठ 1 का शेष)

वरिष्ठों की सेवा), 4.अतिथि यज्ञ (पूर्व निर्धारित योजना से कोई व्यक्ति घर आ जाये उसका आवभक्त करना) 5. भूतयज्ञ (अपने अनिकट व पालतु पशुओं के लिए घर में बनाये भोजन में से कुछ अंश इनको देना) बताये गये है। देव यज्ञ के अतिरिक्त अन्य चार यज्ञ तो सामान्यत: गृहस्थों में होते रहते हैं। परन्तु देव यज्ञ विश्व कल्याण का द्योतक हैं। प्राय: हर शुभकार्यो घरों, संगठनों, उत्सवों पर सामूहिक रूप से देव यज्ञ किया जाता है। यह प्राय: मनुष्य मात्र के लिए ही नहीं अपितु हर जीवधारी एवं वनस्पति के लिए शुभ व लाभकारी है। पर्यावरण की शुद्धि के लिए यह वरदान है। देव यज्ञ के तीन अंग-1.देव पूजा, 2. संगतिकरण एवं 3.दान है। इसमें सामग्री जो पौष्टिक, बलवर्धक एवं सुगन्धित द्रव्यों से परिपूर्ण होती हो, शुद्ध घी गाय का एवं आम, पीपल, बेल आदि वृक्षों की (लकड़ियाँ) समिधायें प्रयोग की जाती हैं। प्राय: घरों में दीपक जलाना, मोमबत्तियाँ का जलाना, पी पैगम्बरों, मन्दिरों व पौधे के नीचे दीपक जलाना, अग्नि पूजन यज्ञ का बहुत ही लघुरूप हैं। सामान्यत: (शुभ व श्रेष्ठ कार्य भी यज्ञ रूप ही है। परन्तु देवयज्ञ करना ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इसका लघु यज्ञों से कोई तुलना नहीं हो सकती है। अत: योग एवं यज्ञ दोनों ही भारतीय वैदिक संस्कृति के अनमोल एवं अद्वितीय खजाने हैं। अगर सभी देश इन दोनों विद्याओं को अपनाना शुरु कर दे तो तभी विश्व शान्ति हो सकती है। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त एवं शिक्षा वर्तमान में पूर्णत: प्रसांगिक हैं।

- मो. 9810580474

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **"श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा"** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0466500 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 21 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)**

-प्रबन्धक

(पृष्ठ 10 का शेष)

शरीर में रोगमुक्त होने की क्षमता

जब कभी अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति की उपलब्धियों की चर्चा की जाती है तो शल्य-चिकित्सा के क्षेत्र में प्राप्त सफलताओं का विवेचन करते हुए प्राय: जनसाधारण की जबान नहीं थकती। अनेक साधक भी उसकी आवश्यकता की वकालत करने लग जाते हैं। शल्य चिकित्सा की वाहवाही करते कभी इस बात का चिन्तन नहीं करते कि क्या उसका कोई प्रभावशाली विकल्प भी हो सकता है? आज के इस वैज्ञानिक युग में जब रोग की प्रारंभिक अवस्था में सही निदान एवम् प्रभावशाली उपचार के बड़े-बड़े दावे किये जाते हैं वहाँ चन्द जन्मजात रोगियों को छोड़कर तथा अकस्मात् दुर्घटनाओं के अतिरिक्त अन्य रोगियों का उपचार के बावजूद रोग शल्य-चिकित्सा की स्थिति में क्यों पहुँचता है? क्या हमारे निदान अधूरे, अपूर्ण अथवा गलत होते हैं, जो रोग की प्रारंभिक अवस्था में उसका उपचार ढूंढनें में समर्थ नहीं होते। वास्तव में शल्य चिकित्सा अंग्रेजी चिकित्सा के विकास का सूचक नहीं, अपितु उसके दुष्प्रभावों एवं खोखलेपन का सूचक होती है।

जो शरीर हृदय, फेंफड़े, गुर्दे जैसे अंगो का निर्माण स्वयं करता है, रक्त एवं कोशिकाओं जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करता है, क्या उसमें इतनी क्षमता भी नहीं होती है कि स्वयं को स्वस्थ बना सके? रोग होने के कारणों को तथा उसके सहयोगी अप्रत्यक्ष रोगों को दूर करने से हम बिना शल्य चिकित्सा पुन: स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए रोग होने की विपरीत प्रक्रिया को अपनाना होगा। यदि शरीर में कहीं गांठ होती है तो वह बिखर भी सकती है, उसको संकुचित भी किया जा सकता है, उसको घोला भी जा सकता है। इन प्रक्रियाओं में शिवाम्बु-चिकित्सा, पंचगव्य चिकित्सा, सूजोक, बियोल मेरेडियन ऊर्जा संतुलन चिकित्सा, चुम्बकीय चिकित्सा, सूर्य किरण चिकित्सा, ध्यान एवं एक्यूप्रेशर चिकित्सा आदि के सहयोग से जो प्रभावशाली परिणाम सामने आ रहे हैं, उनको झुठलाया नहीं जा सकता। स्वावलम्बी चिकित्सा पद्धतियाँ शरीर में विजातीय तत्त्वों को निष्कासित कर संतुलन बनाने के सिद्धान्त पर कार्य करती है, अवरोध मिटाने में तथा शरीर की प्रतिकारात्मक शक्ति बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जहाँ प्रकाश है, वहाँ अंधेरा रह नहीं सकता। शक्तिशाली राष्ट्र पर कोई आक्रमण की बात सोच नहीं सकता। जो अपनी प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ा लेता है, वहाँ शल्य चिकित्सा की आवश्यकता नहीं रहती।

जो आधुनिक चिकित्सा के दुष्प्रभावों को समझता है, वही अपनी सुषुप्त मानसिक एवं आत्मिक चेतना को जागृत कर विकल्प का मार्ग चुनता है। स्वावलम्बी बनने की इच्छा रखने वाला परावलम्बन को छोड़ता है। पाप से घृणा करने वाला ही धर्म की तरफ आकृष्ट होता है। पाप को अच्छा मानने वाला धर्मी नहीं बन सकता। अहिंसा में विश्वास रखने वाला हिंसात्मक तरीके नहीं अपना सकता और हिंसा को प्रोत्साहित करने वाली चिकित्सा पद्धतियों का अनुमोदन भी नहीं कर सकता। परन्तु आज रोगी में धैर्य और सहनशीलता की कमी, अज्ञान एवम् सम्यक् चिंतन के अभाव के कारण स्वयं की क्षमताओं के प्रति प्राय: हमारा विश्वास नहीं हो रहा है, जिससे निदान की सत्यता को समझे बिना अपनी असजगता एवं डॉक्टर पर अन्धविश्वास के कारण कभी-कभी अपने आपकों डॉक्टरों की प्रयोगशाला बनाते व्यक्ति तनिक भी संकोच नहीं करता। रोगी स्वयं कुछ नहीं करना चाहता, इसीलिए शल्य चिकित्सा के दुष्प्रभाव एवम् उपचार के अन्य प्रभावशाली विकल्प जनसाधारण को समझ में नहीं आते हैं, परन्तु जो सनातन सत्य है उसको नकारा नहीं जा सकता। पारस को पत्थर कहने से वह पत्थर नहीं हो जाता और पत्थर को पारस कहने मात्र से वह पारस नहीं बन जाता। जो कोई चिकित्सक अथवा वैज्ञानिक पूर्वाग्रह छोड़ अनेकान्त दृष्टि से शारीरिक क्षमताओं का अध्ययन करेंगे उनको इस तथ्य को स्वीकार करना पड़ेगा कि 'शरीर में स्वयं रोग मुक्त होने की क्षमता होती है।'

- चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003

।।ओ३म्।।
HANDICRAFT
सुषमा कला केन्द्र
आकर्षक स्मृति चिन्ह तथा पारितोषिक सामग्री के लिए सम्पर्क करें।
प्रो. सुषमा गोगलानी
मो. 9582436134
प्रतिनिधि
अशोक कुमार गोगलानी
मो.: 8587883198
सी-1/1904, चैरी काऊंटी, ग्रेटर नोएडा (वैस्ट)

(पृष्ठ 2 का शेष)

बताते हुए सदन को सूचित किया कि सरकार से यह आग्रह किया जा रहा है कि उच्च माध्यमिक परीक्षाओं की प्रमाण पत्रों में विद्यार्थियों द्वारा नैतिकता और चरित्र को लेकर प्रदर्शित व्यवहार के अंक दर्ज किए जाने चाहिए जिससे इस विषय का महत्व रेखांकित हो सके। प्रधान जी ने आर्य समाज नागौरी गेट हिसार के प्रधान श्री हरि सिंह सैनी तथा उनके साथ आए अन्य महानुभावों का भाव-भरा स्वागत किया।

श्री हरिसिंह सैनी (आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार) ने कहा कि हम सबको मिलकर शिक्षा के साथ-साथ आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लग जाना चाहिए। आपस में जो मन मुटाव है, उसको समाप्त करके अपनी क्षमता के अनुसार आर्य समाज के कार्यों में लग जाना चाहिए। मैं आज इस मंच से बोलते हुए इतना गद्‌गद् हो रहा हूँ कि मुझसे शब्द नहीं बन पा रहे हैं।

अधिवेशन में सभामन्त्री ने वर्ष 2017-18 का वार्षिक विवरण प्रस्तुत किया और साथ ही वर्ष 2018-19 का वार्षिक बजट प्रस्तुत

किया, जिसकी सर्वसम्मति से सम्पुष्टि की गई।

अधिवेशन में उपस्थित प्रतिनिधियों और अधिकारियों से सभा के कार्यो को गतिशील बनाने के लिए सुझाव मांगे गए, जिसमें श्री अजय सहगल (दिल्ली), श्री अरविंद घई (जालंधर), ब्रि. ए. के अदलखा (आर्य समाज अनारकली), श्री अनिल आर्य (पुण्डरी), श्री लखीराम फौजी (दादुपुर) आदि ने सभा को अधिक सक्रिय और गतिशील बनाने के सुझाव दिए। इनके अतिरिक्त श्री मामचंद रिवारिया (दिल्ली) तथा श्री सीताराम आर्य (हिसार) ने भी लिखित सुझाव दिए। इन सुझावों में डी.ए.वी. के माध्यम से आर्य समाजी बच्चों को कोचिंग देना, प्रत्येक शुभ कार्य से पूर्व यज्ञ करना, कुरीतियों को समाप्त करना, आर्य समाज एवं डी.ए.वी. द्वारा किए गए कार्यों का प्रचार-प्रसार करना मुख्य सुझाव थे। अधिवेशन के आरंभ में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लारेंस रोड, अमृतसर के श्री नरेन्द्र कुमार डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर, जयपुर के श्री राधा बल्लभ सक्सेना एवं डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, खारघर मुम्बई की श्रीमती रंजना चटर्जी ने बहुत ही मधुर भजनों की प्रस्तुति दी, जिन्हें सुनकर अधिवेशन में उपस्थित सभा प्रतिनिधि बहुत प्रभावित हुए। इन संगीत अध्यापकों ने इस वर्ष ऋषि जन्मोत्सव पर हुई अखिल भारतीय संगीत गोष्ठी में द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना स्थान प्राप्त किया था।

मित्र जीवन में एक मित्र श्री कृष्ण जैसा होना ही चाहिए जो तुम्हारे लिए युद्ध न लड़े पर सच्चा मार्गदर्शन दिखाता रहे।

और एक मित्र कर्ण जैसा भी जरूर होना चाहिए जो तुम्हारे गलत होते हुए भी तुम्हारे लिए युद्ध करे

टंकारा समाचार जुलाई 2018

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2018-20

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-07-2018

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.06.2018

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय